Fortnightly per copy Rs. 4/-

ओ३म्

3rd April 2023

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Website : http://www.aryasabhaapts.org

Narendra Bhavan Telephone : 040 24760030

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के ११३वें दीक्षांत समारोह में

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह

गुरुकुल कांगड़ी विशविद्यालय के ११३वें दीक्षांत समारोह में पहुंचे केन्द्रीय गृह मंत्री ने दीक्षांत यज्ञ में आहुति दी ।

विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में केन्द्रीय मन्त्री मान्यश्री अमितशाह विद्यार्थियों को उपाधियाँ व स्वर्ण पदक प्रदान करते हुए । चित्र में उत्तराखण्ड प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री पुष्कर सिंह धामी जी, कुलाधिपति श्री सत्यपाल सिंह जी तथा उपकुलपति प्रो. सोमदेव शतांशु जी

गुरुकुल कांगड़ी के विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में भारत सरकार के केन्द्रीय मन्त्री मान्यश्री अमितशाह जी तथा विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री सत्यपाल सिंह जी और उपकुलपति प्रो. सोमदेव शतांशु जी तथा स्वामी प्रणवानन्द जी व स्वामी आर्यवेश जी उपस्थित

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के ११३वें दीक्षांत समारोह में केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के ११३वें दीक्षांत समारोह में पहुंचे केंद्रीय गृह मंत्री ने दीक्षांत यज्ञ में आहुति दी। उनके दीक्षांत यज्ञ में आहुति देने के बाद समारोह आरंभ हुआ। इसके बाद उनके मंच पर पहुंचते ही संसद में दिए गए उस भाषण का आडियो बजाया गया। अमित शाह ने देश की जनता को रामनवमी की शुभकामनाएं देते हुए भाषण की शुरुआत की। उन्होंने कहा कि प्रभु श्रीराम के जन्मदिन दिन पर छात्र-छात्राएं शिक्षार्थी का जीवन समाप्त करके दीक्षित होकर नए जीवन और समाज में जाने की शुरुआत करने जा रहे हैं। मैं बहुत-बहुत शुभकामनाएं देना चाहता हूं। छात्र-छात्राओं को हमेशा गर्व रहेगा कि उनकी शिक्षा, दीक्षा और दीक्षांत तीनों गुरुकुल कांगड़ी जैसे महान संस्थान में हुआ है।

शाह के हाथों स्वर्ण पदक पाकर खिल उठे चेहरे

गृह मंत्री अमित शाह के हाथों पांच विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक दिए गए हैं। भौतिकी विज्ञान से अविशी चौधरी, बीएससी से वैभव कांडवाल, एमएससी कंप्यूटर विज्ञान से प्रज्ञा चौधरी, एमए संस्कृत साहित्य से ओम प्रकाश और एमएससी सूक्ष्म जीव विज्ञान से सागर चिन्नयोटी को स्वर्ण पदक दिया गया। केंद्रीय गृह मंत्री के हाथों स्वर्ण पदक पाकर विद्यार्थियों के चेहरे खिल उठे।

मेडल से नवाजा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति देश में एक नई वैचारिक क्रांति लाएगी। इसके माध्यम से क्लास लैस और स्ट्रीम लैस शिक्षा पद्धति को लागू किया जा जा रहा है। नई शिक्षा नीति के तहत आने वाले दिनों में दस राज्यों में २० मातृ भाषा में इंजीनियरिंग कह्लेज होंगे। जिसमें मध्य प्रदेश के एक कह्लेज में मेडिकल साइंस की पढ़ाई शुरू हो चुकी है। ढेर सारी परीक्षाएं भी मातृ भाषा में विद्यार्थी दे सकेंगे। इस प्रकार की व्यवस्था मोदी सरकार ने की है।

केन्द्रीय गृहमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हमारे देश को हर क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए कई काम किए हैं। कहा कि गुलामी के कालखंड के दौरान भारत से चोरी की गईं कई मूर्तियों को विश्व के कई स्थानों से वापिस लाकर भारत में उनके वास्तविक स्थानों पर पुनर्प्रतिष्ठित करने का काम किया है। मुगलों के शासन से हमारे कई धर्म, संस्कृतियों और राष्ट्र के सम्मान चिन्ह ऐसे ही पड़े थे, ऐसे सभी हमारे राष्ट्र के ऊर्जा केन्द्रों को एक बार फिर प्रधानमंत्री मोदी ने ऊर्जावान बनाने का काम किया। राम मंदिर का मसला बाबर के समय से अटका हुआ था, लेकिन सुप्रीम कोर्ट के एक आदेश के बाद ही पीएम मोदी ने भूमिपूजन किया। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी ने औरंगजेब द्वारा तोड़ा हुआ काशी विश्वनाथ कारीडोर फिर से बनाने का काम किया। केदारनाथ और बदरीनाथ के साथ-साथ गुजरात में सोमनाथ मंदिर फिर से सोने का बन रहा है।

नई शिक्षा नीति में बच्चा हर स्तर पर एक्जिट और एंट्री कर सकता है

नई शिक्षा नीति में एक साल की पढ़ाई करेंगे तो सर्टिफिकेट मिलेगा, दो साल में डिप्लोमा और तीन साल में पढ़ाई करने पर डिग्री मिलेगी। चौथे साल में रिसर्च मिल जाएगा। नई शिक्षा नीति में बच्चा हर स्तर पर एक्जिट भी कर सकता है और एंट्री भी। देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी चाहते हैं कि हमारे युवाओं एक प्लेटफार्म दिया जाए। जिसके माध्यम से विद्यार्थी मां भारती का गुणगान से पूरे विश्व में कर सकें।

दयानंद के बताए मार्ग पर चलने का प्रयास करें

अमित शाह ने कहा कि स्वामी श्रद्धानंद ने वैदिक शिक्षा पद्धति को जीवित रखने के संकल्प के साथ गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। आज यह संस्थान एक वटवृक्ष बन चुका है। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय आधुनिक ज्ञान विज्ञान और प्राचीन ज्ञान विज्ञान के अद्भुत समन्वय का अद्भुत कार्य किया है। स्वामी दयानंद और स्वामी श्रद्धानंद ने वैदिक शिक्षा को पुनर्जीवित करने का महान कार्य किया है। यह प्राचीन भारतीय संस्कृति और वेदों के ज्ञान के साथ आधुनिक शिक्षा को जोड़ने का कार्य इस विश्वविद्यालय ने किया है। कहा कि दयानंद का संदेश स्वामी श्रद्धानंद ने बहुत हू-ब-हू जमीन पर उतारने का काम किया। मातृ भाषा की अलख जगाने वाले वो संन्यासी ने देश में हिंदी को महत्वपूर्ण स्थान देने में बहुत योगदान दिया। उन्होंने आधुनिक विषयों को छोड़कर शिक्षा को परिपूर्ण बनाने का काम किया। जिससे आने वाले समय में गुरुकुल कांगड़ी का इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाना है। छात्र-छात्राएं महर्षि स्वामी दयानंद का संदेश लेकर जाएं। दयानंद के बताए मार्ग पर चलने का प्रयास करें। क्योंकि उन्हीं के माग पर चलकर देश को आगे ले जाया सकता है।

विवि के कुलसचिव प्रो. सुनील कुमार ने बताया कि विवि के ११३वें दीक्षांत समारोह में ८ वर्षों के करीब १८०० छात्र-छात्राओं को स्नातक, परास्नातक, पीजी डिप्मोला, पीएचडी और गोल्ड मेडल देकर सम्मानित किया गया। वर्ष २०१४ से लेकर वर्ष २०२२ तक के छात्र-छात्राओं को दीक्षांत समारोह में उपाधि देने के लिए आमंत्रित किया गया था।

भारतीय संस्कृति पर आधारित शिक्षा देने का कार्य करता है गुरुकुल : धामी

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानंद की तपोभूमि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय भारतीय संस्कृति पर आधारित शिक्षा देने का कार्य करता है। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह को संबंधित करते हुए उन्होंने विश्वास जताया कि यहां से शिक्षित और दीक्षित छात्र राष्ट्र विकास में योगदान देंगे। स्वामी दयानंद और स्वामी श्रद्धानंद की वैदिक ज्ञान परंपरा भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ाने का कार्य करती है और यहां के छात्र इस परंपरा को जीवित रखेंगे।

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. सत्यपाल सिंह ने कहा कि यह एक महान तपस्वी और क्रांतिकारी स्वामी श्रद्धानंद की कर्मस्थली है। कुछ शक्तियां कतिपय निजी स्वार्थ वश संस्था पर गिद्ध दृष्टि रखती हैं और एक संरक्षक के रूप में वे इसकी रक्षा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने केंद्रीय गृह मंत्री से विश्वविद्यालय के संरक्षण करने का निवेदन किया। कुलपति प्रो. सोमदेव शतांशु ने कहा कि विश्वविद्यालय निरंतर प्रगति पथ अग्रसर है और भारती ज्ञान परंपरा को आगे बढ़ाने का कार्य कर रहा है। अपने विस्तृत प्रतिवेदन में उन्होंने विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों और विभागों की प्रगति के बारे में बताया।

नव दीक्षित छात्रों को सत्य अन्वेषण और लोक उपकार के लिए कार्य करने के लिए कुलपति ने दीक्षा उपदेश भी प्रदान किया। समारोह के दूसरे सत्र में कुलाधिपति डॉ. सत्यपाल सिंह और कुलपति प्रो. सोमदेव शतांशु ने पीएचडी, स्नातकोत्तर, स्नातक और स्वर्ण पदक छात्र-छात्राओं को प्रदान किए। दीक्षांत समारोह का संचालन कुलसचिव प्रो. सुनील कुमार ने किया। इस अवसर पर दीक्षांत समारोह के मुख्य संयोजक प्रो. श्रवण कुमार शर्मा, संयोजक प्रो. प्रभात कुमार, सह संयोजक डा. अजय मलिक, वित्ताधिकारी प्रो. देवेंद्र गुप्ता, प्रो. डीएस मलिक आदि मौजूद रहे।

ये संत गण और नेता रहे मौजूद

परमार्थ आश्रम ऋषिकेश के परमाध्यक्ष चिदानंद मुनि, महामंडलेश्वर कैलाशानंद, श्रीमहंत रविंद्र पुरी, यज्ञ मुनि, स्वामी जयंत, आचार्य राजेंद्र, आचार्य विजयपाल शास्त्री, स्वामी प्रणवानंद, स्वामी यतीश्वरानंद, प्रदेश के डीजीपी अशोक कुमार भी मंच पर उपस्थित रहे। इसके अलावा पूर्व मुख्यमंत्री त्रिवेंद्र सिंह रावत, पूर्व मुख्यमंत्री तीरथ सिंह रावत, डॉ. धन सिंह रावत, सांसद डा. रमेश पोखरियाल निशंक राज्यसभा सांसद नरेश बंसल, राज्यसभा सांसद डा. कल्पना सैनी, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र भट्ट, विधायक मदन कौशिक, विधायक आदेश चौहान आदि मौजूद रहे।

आर्य-हिन्दुओं की सामाजिक व राजनैतिक उन्नति में बाधक उनकी अवैदिक मान्यतायें एवं वेद विरुद्ध आचरण

-मनमोहन कुमार आर्य

महाभारत काल तक संसार में हिन्दू जाति का अस्तित्व कहीं दृष्टिगोचर नहीं होता। महाभारत एवं रामायण इतिहास के दो प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। दोनों में आर्य जाति का उज्जवल इतिहास वर्णित है। महाभारतकाल वर्तमान काल से लगभग पांच हजार वर्ष पुराना है तो रामायण उससे कहीं अधिक प्राचीन है। इसका अर्थ है कि सृष्टि के आदि काल से महाभारतकाल तक संसार में आर्यो का ही निवास था और संसार में वेद धर्म प्रवृत्त था। हिन्दू, मुस्लिम व ईसाई आदि का वर्णन महाभारत में न होने और इसके समकालीन व वेद से इतर इससे पूर्व का अन्य कोई ग्रन्थ उपलब्ध न होने से जिसमें आर्येतर किसी जाति व सम्प्रदाय का उल्लेख हो, यह स्वीकार करना पड़ता है कि आर्येतर सभी सम्प्रदाय व जातियों का उदय महाभारत काल के बहुत बाद में हुआ है। महाभारत काल व उसके सहस्रों वर्ष बाद तक भारत के निवासी सभी लोग आर्य कहलाते थे जिसका अर्थ था कि सभी वेदानुयायी और श्रेष्ठ आचार और विचार वाले मनुष्य थे। महाभारत युद्ध से सामाजिक पतन पराकाष्ठा पर पहुंच गया था जिससे समाज कमजोर होकर उसमें अज्ञानता व अंधविश्वास उत्पन्न हुए। उसी के परिणाम स्वरूप अज्ञानता के कारण भारत की आर्यजाति अपना यथार्थ नाम 'आर्य' भी भूल गई और कालान्तर में मुसलमानों ने उसे हिन्दू नाम दिया जिसे उसने अपना लिया और आज इसी नाम से उसे पुकारा जाता है। मुसलमानों का इतिहास लगभग १४०० वर्ष पुराना होने के कारण हिन्दू शब्द भी लगभग १४०० वर्ष पुराना ही स्वीकार करना पड़ता है। यह भी जान लें कि ईसाईयों व मुसलमानों का इतिहास भी अधिक पुराना न होकर यह क्रमशः २००० व १४०० वर्ष पुराना ही है जबकि आर्यजाति का इतिहास लगभग २ अरब वर्ष पूर्व सृष्टि के आरम्भ से ही है और वर्तमान की हिन्दू जाति अतीत की आर्य जाति ही है।

महाभारत युद्ध की समाप्ति के बाद अध्ययन अध्यापन के बाधित होने के कारण देश व संसार में अज्ञान फैल गया जिससे संसार में अंधविश्वास व कुरीतियां उत्पन्न हुईं। भारत में अज्ञानता के कारण मूर्तिपूजा, जन्मना जातिवाद, अवतारवाद, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध जैसी अनेकानेक समाज को कमजोर करने वाली प्रथायें व कुरीतियां प्रचलित हो गईं। इस कारण समाज जीर्ण शीर्ण हो गया। सबसे अधिक समाज को हानि पहुंचाई तो वह विद्या की वृद्धि में आई रूकावट व अविद्या सहित मूर्तिपूजा और जन्मना जातिवाद आदि ने पहुंचाई। अन्य अन्धविश्वासों व कुरीतियों का भी समाज को कमजोर व नष्ट करने में योगदान है। महाभारत काल के बाद हमारे देश में एकमात्र जैमिनि ऋषि ही हुए हैं। उनके बाद ऋषि परम्परा अवरूद्ध हो गई। इसका अर्थ है कि महर्षि जैमिनी के बाद समाज का तेजी से पतन हुआ और अध्ययन व अध्यापन के न्यून होने व लोगों की वेद व वैदिक साहित्य पढ़ने में रूचि न होने के कारण दुर्दशा हुई। इससे समाज का पतन होता गया। अनपढ़ व चरित्र शून्य ब्राह्मण भी अन्यों से श्रेष्ठ मान लिया गया। यह अति अवनत अवस्था का सूचक है। इस अज्ञानता के कारण वेद के यथार्थ अर्थ न कर उनके

लौकिक व रूढ़ि अर्थ प्रचलित होने लगे जिससे यज्ञों में पशु हिंसा का प्रचार व प्रचलन हुआ। समय के साथ इस स्थिति में वृद्धि होती रही। लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व देश में महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी का जन्म हुआ। उन्होंने यज्ञों में पशु हिंसा को देखा तो उन्हें यह अमानवीय व क्रूरता का कार्य लगा। उन्होंने यज्ञों व वेदों का विरोध किया और अहिंसा का प्रचार किया। कालान्तर में महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी की मृत्यु के बाद उनके शिष्यों ने अपने आचार्यों की मूर्तियां बनाकर उन्हीं की पूजा प्रचलित की। आर्य जाति विद्याहीन तो थी ही, उन्हें पशुहिंसा वाले यज्ञों से बौद्ध और जैन मत के कार्यकलाप सरल व अच्छे लगे और वह सब उन्हीं को मानने लगे।

जैन व बौद्ध मत के प्रभाव से ही देश में मूर्तिपूजा आरम्भ हुई जिसका कालान्तर में विस्तार हुआ और शैव, वैष्णव व शाक्त आदि अनेक सम्प्रदाय उत्पन्न हो गये। इनके आचार्यों ने नाना प्रकार की काल्पनिक कथाओं के ग्रन्थ भी बनाये जिन्हें विद्याहीन भक्तों ने सत्य मान लिया। यह अंध भक्ति इतनी घातक सिद्ध हुई कि समाज कमजोर हुआ, देश पर बाह्य आक्रमण हुए, मुसलमानों ने हिन्दुओं के विशाल व वैभव सम्पन्न मन्दिरों को तोड़ा व लूटा, पण्डे पुजारियों व क्षत्रियों की हत्यायें कीं, स्त्रियों को दूषित किया और अनेक इस प्रकार के कुकर्म किये। देश गुलाम हो गया और एक हजार वर्षों की गुलामी के बाद सन् १९४७ में इसका कुछ भाग स्वतन्त्र होने पर भी मूर्तिपूजा की हानिकारक मानसिकता से देश उबर नहीं पाया। आज भी मूर्तिपूजा पहले से भी शायद अधिक हो रही है। कोई मूर्तिपूजक व उनका आचार्य मूर्तिपूजा विषयक महर्षि दयानन्द द्वारा उठाये प्रश्नों पर विचार करने व उनका देने की स्थिति में नहीं है। यह एक प्रकार का मानसिक पतन ही कह सकते हैं। मूर्तिपूजा से जुड़ी अन्य भी अनेक समस्यायें हैं जिन्होंने समाज को खोखला कर दिया है। अनेक मन्दिरों में शूद्र जाति के लोगों को प्रवेश करने नही दिया जाता जिससे हिन्दू समाज टूट रहा है व दिन प्रतिदिन कमजोर हो रहा है। किसी मूर्तिपूजक व उनके आचार्य को देश में हिन्दुओं की घटती आबादी और उसके दुष्परिणामों पर विचार व चर्चा करने का भी समय नहीं है। बुद्धि हो तो चर्चा हो, जब जड़पूजा से बुद्धि ही जड़ हो गई है तो विचार व चिन्तन तो ज्ञान व विद्या की अपेक्षा रखते हैं। बुद्धिजीवियों को यह स्पष्ट दिखाई देता है कि वर्तमान हालात में हिन्दू जाति का भविष्य उज्जवल न होकर इस पर अनेक खतरे मण्डरा रहे हैं जिसमें इसके पुनः गुलाम होने, धर्मान्तरित होने का खतरा भी विद्यमान है।

यदि हिन्दू जाति को महाभारतकालीन व उससे पूर्व के गौरव को प्राप्त करना-कराना है तो हिन्दू समाज से अविद्या को नष्ट कर उसे वेद व वैदिक साहित्य का ज्ञान कराकर उसके आधार पर उन्नत करना होगा जिसमें न मूर्तिपूजा, न जन्मना जातिवाद, न मृतक श्राद्ध, न फलित ज्योतिष और न अवतारवाद का कोई स्थान है। मूर्तिपूजा का स्थान निराकार ब्रह्म वा ईश्वर की वेदमंत्रों से स्तुति, प्रार्थना व उपासना सहित दैनिक अग्निहोत्र को देना होगा, जन्मना जातिवाद को समाप्त कर उसके स्थान पर मनुष्य के गुण, कर्म व स्वभाव को महत्व देना होगा, अवतारवाद को छोड़कर ईश्वर के निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा व सच्चिदानन्द स्वरूप को मानना होगा, फलित ज्योतिष को भूलकर पुरूषार्थ व कर्म फल व्यवस्था में विश्वास करना होगा और मृतक श्राद्ध के स्थान पर जीवित माता-पिता व वृद्धों की सेवा करने का व्रत लेना होगा। ऐसा करके ही हिन्दू समाज शक्तिशाली हो सकता है और आज के आधुनिक काल में टिका रह रहता है। वह दिन हिन्दू समाज के लिए उत्सव मनाने के लिए उपयुक्त हो सकता है कि जब एक भी हिन्दू का धर्मान्तरण न हो, हिन्दू सदा-सर्वदा बहुसंख्यक रहें यह

सुनिश्चित हो और अन्य मतों के लोग वैदिक हिन्दू मत की श्रेष्ठता के कारण बड़ी संख्या में इसको अपनायें व ग्रहण करें।

मूर्तिपूजा का मुख्य कारण अवतारवाद की कल्पना है। वेद में अवतार का समर्थन नहीं है अपितु खण्डन अवश्य मिलता है। जब स्वयं ईश्वर अपने ज्ञान वेद में अपने आप को अजन्मा कहता है तो फिर अवतारवाद को मानना अज्ञानता व स्वार्थ ही कहा जा सकता है। इसे जितनी जल्दी समाप्त किया जा सके समाप्त किया जाना चाहिये। राम, कृष्ण व दुर्गा आदि देवी को मुख्यतः अवतार माना जाता है। इनका अवतार होना रामायण एवं महाभारत के लेखों से भी सिद्ध नहीं होता। यह अपने महत् कार्यों से महापुरुष थे जैसे विगत शताब्दियों में आचार्य चाणक्य, स्वामी शंकराचार्य और ऋषि दयानन्द जी आदि हुए हैं। इन महापुरुषों ने भी धर्म व जाति की रक्षा के लिए अपूर्व व दीर्घकालीन लाभ के कार्य किये हैं। इन तीनों ने ही वेदों व वैदिक धर्म की श्रेष्ठता सिद्ध की है। वेद की तुलना में सभी मत-मतान्तरों, उनकी मान्यतायें व सिद्धान्त ज्ञान व विद्या की दृष्टि से तुच्छ व न्यून हैं। मत-मतान्तरों ज्ञान विरुद्ध अनेक मिथ्या बातें भी हैं जो इन्हें अल्पज्ञानी मनुष्यों द्वारा निर्मित सिद्ध करती हैं। मत-मतान्तरों के ग्रन्थों में जिता भाग सत्य है वह प्रशंसनीय है। उनका सत्य भाग भी वेदों से उनमें गया हुआ है। यदि फलित ज्योतिष की चर्चा करें तो यह मिथ्या विद्या है।

वेदों में इसका कहीं उल्लेख भी नहीं है। देश के पतन व गुलामी में फलित ज्योतिष का मुख्य योगदान रहा है। यदि फलित ज्योतिष न होता तो शायद सोमनाथ मन्दिर सहित मथुरा, अयोध्या व काशी के मन्दिर न तोड़े जाते व लूटे गये होते। हम व हमारे आर्यसमाज के विद्वान व आर्य परिवारों के लोग फलित ज्योतिष को किंचित भी नहीं मानते। विदेशों में भी इसका प्रचार नहीं है। वहां के सभी लोग बिना इसकी सहायता के अपना सामान्य जीवन व्यतीत कर रहे हैं। वह हमसे अधिक समृद्ध स्वस्थ ज्ञानवान व प्रतिष्ठित हैं। अतः फलित ज्योतिष से हिन्दुओं को जितना शीघ्र हो सके छुटकारा पा लेना चाहिये। ऐसा होने पर ही हिन्दू जाति बलिष्ठ व प्राणवान बन सकती है। मृतक श्राद्ध भी एक मिथ्या परम्परा है। जो मनुष्य मरता है उसका पुनर्जन्म कुछ ही दिनों में हो जाता है। अतः उसका श्राद्ध करना मिथ्या व अज्ञानपूर्ण कार्य ही है। इस प्रथा को जितना शीघ्र छोड़ सकें, छोड़ देना चाहिये। इसी प्रकार जन्मना जातिवाद समाज का कोढ़ व कैंसर के समान रोग है। इसने हिन्दू जाति को सबसे अधिक जीर्ण व कमजोर किया है। जातिवाद केवल कानून से ही नहीं अपितु समाज के उच्च वर्ग के लोगों, स्त्री व पुरुष, सभी के मनों से बाहर होना चाहिये। आज के पण्डे पुरोहित भी अभी इससे दूर नहीं हो पाये हैं। यह भी हिन्दुओं की बहुत बड़ी विडम्बना है। इससे अनेक प्रकार की हानि हो रही है। देश के कुछ राजनीतिक दल इसी कारण वोट बैंक की राजनीति करते हैं जिसका देश पर बुरा प्रभाव होता है। अनेक समुदाय ऐसे हैं जिनमें जातिवाद की प्रवृत्ति बहुत अधिक है। विगत दिनों गुजरात व हरियाणा सहित राजस्थान आदि में जाति केन्द्रित आन्दोलन भी हुए हैं जिससे देश व समाज के हितों की अपूरणीय क्षति हुई है। समाज इससे जुड़ने व मजबूत होने के स्थान पर बटा व कमजोर हुआ है। सभी धार्मिक, सामाजिक व राजनीतिक नेताओं को मिलकर विचार कर इस समस्या का समाधान करना चाहिये।

हमने देश, समाज, वैदिक धर्म व आर्य-हिन्दुओं के हित की दृष्टि से इस लेख को प्रस्तुत किया है। इस विषय में और बहुत कहा जा सकता है। शायद बड़े बड़े ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं। लिखे भी गये हैं। अतः इसे यहीं विराम देते हैं।

సామాజిక భ్రష్టత్వం ఈ దేశ దౌర్భాగ్యం

-ప్రొ॥ భరత ఝున్‌ఝున్ వాలా ఆర్థిక వేత్త బెంగుళూరు, ఐ.ఐ.ఎం.

ప్రయోజనాలకు కాకుండా ప్రజాశ్రేయస్సును దృష్టిలో పెట్టుకుని పాలకులు వ్యవహరించేలా చేయడం ఎలా ? పాలనకు సంబంధించిన మౌలిక సమస్య ఇది. ఇదే సమయంలో ప్రతి మనిషీ తన సొంత ప్రయోజనానికే ప్రాధాన్యమిస్తాడనే సత్యాన్ని మనం విస్మరించ కూడదు. దీన్నిబట్టి రెండు పరస్పర విరుద్ధ విషయాలను కాంక్షిస్తున్నామని చెప్పక తప్పదు. ఒక పక్క మన నాయకులు తమ సొంత ప్రయోజనాలకు అతీతంగా వ్యవహరించాలని మనం కోరుకుంటున్నాము, మరో పక్క నాయకులు అనివార్యంగా తమ సొంత ప్రయోజనాలకు అనుగుణంగా వ్యవహరించ దాన్ని అంగీకరిస్తున్నాము !ఇదొక చిక్కు సమస్య మరి దీనికి పరిష్కారమేమిటి ? స్వప్రయోజనంలో వివిధ [illegible] ఉన్నాయనే వాస్తవాన్ని మనం గుర్తించి తీరాలి. డబ్బు అవసరాలు, అధికార లాలస అంశాలలో మోహన్ దాస్ కరంచంద్ గాంధీ తన వ్యక్తిగత ప్రయోజనాలను అధిగమించారు. అదే సమయంలో ఆయన తన ఆధ్యాత్మిక ఆసక్తులకు అనుగుణంగా వ్యవహరించారు. ప్రజల లౌకిక ప్రయోజనాలు, నాయకుని ఆధ్యాత్మిక ఆసక్తులు ఎటువంటి వైరుధ్యం ప్రయోజనాలు, నాయకుని ఆధ్యాత్మిక ఆసక్తులు ఎటువంటి వైరుధ్యం లేకుండా ఒకేసారి కలసికట్టుగా నెరవేరగలవు. నాయకులు తమ లౌకిక ప్రయోజనాలను అధిగమించి, ఉన్నతాదర్శాల సాధనకు కృషి చేసేలా నాయకులను పురిగొల్పడం ఎలా ? అనేది మనం ఆలోచించి, నిర్ణయించుకోవాల్సిన విషయం.

సమాజ వ్యవహారాలలో సాధువు పాత్రను మరింతి శక్తిమంతం చేయడమే ఆ చిక్కు సమస్యకు హిందూ ధర్మ పరిష్కారం. బ్రాహ్మణుడు, క్షత్రియుడి మధ్య ఈ ధర్మం ఒక ప్రత్యేకతను పాటించింది. క్షత్రియులను బ్రాహ్మణులు మాత్రమే నియంత్రించాలని మను స్మృతి నిర్దేశించింది. తన తదుపరి భోజనం ఎక్కడనుంచి వస్తుందనే విషయం తెలియనివాడే ఉత్తమ బ్రాహ్మణుడు అని కూడా ఆ స్మృతి కారుడు పేర్కొన్నాడు. బ్రాహ్మణుడి స్వచ్ఛంద పేదరికం క్షత్రియులను ఎదిరించి నిలబడగలిగే, సత్యాన్ని ప్రవచించ గలిగే శక్తిని, నిబ్బరాన్ని ఇస్తుంది. కనుకనే నేపాల్ నిరంకుశ పాలకుడిని గురు గోరఖ్‌నాథ్ ఎదిరించాడు. తన తపశ్శక్తితో వర్షాలు కురువకుండా చేశాడు. నిరంకుశపాలకుడు తన అనుగ్రహాన్ని అర్థించే విధంగా చేశాడు. బ్రాహ్మణుడు, ముని లేదా సాధువుకు విధిగా ఒక పాత్ర వుండాలని, ఆ ఆధ్యాత్మికుని సామాజిక పాత్రను పటిష్ఠపరచినప్పుడు మాత్రమే సుపరిపాలన సాధ్యమవుతుందని హిందూ సంప్రదాయం ఘోషిస్తుంది. ఆధ్యాత్మికుల సామాజిక బాధ్యత బానపై హిందూ పాలనా వ్యవస్థ ఆధారపడివున్నది. ఈ బాధ్యత వారిని, పాలకుల అవివేకాన్ని ప్రశ్నించేందుకు, ఎదరించేందుకు పురిగొల్పు తుంది. హిందూ మతం భౌతిక ప్రపంచ ఉనికిని నిరాకరించినప్పుడు ఆ పాలనా వ్యవస్థ కూలిపోయింది. భౌతిక జగత్తు మిథ్య అనే భావాన్ని ఆది శంకరాచార్యులు ప్రవచించారు. ఈ భావన పర్యవసానంగా భౌతిక ప్రపంచం నిజం కానప్పుడు సాధువు, పాలకుడిని ఎదిరించ వలసిన అవసరం లేదనే విశ్వాసం ప్రబలిపోయింది. భౌతికప్రపంచమే ఉనికిలో లేనప్పుడు అవివేక పాలకులను ఎదిరించ వలసిన అవసరం సాధువుకు లేదు. తన వ్యక్తగత మోక్షానికి మాత్రమే ఆ పుణ్య పురుషుడు ఆరాటపడడం ప్రారంభమయింది. ఇది, క్షత్రియులను నియంత్రించడమనే తమ సామాజిక పాత్రను బ్రాహ్మణులు మూర్తిగా త్యజించడానికి దారితీసింది. క్షత్రియులు లేదా నిరంకుశ పాలకులు ప్రజలను ఎంతగా వేధిస్తేనేమి ? అసలు పాలకులు, ప్రజలు ఇరువురూ మిథ్యలే కదా ! మరి తులసీదాస్, కబీర్ ప్రబోధాలు ప్రజలను నిరంకుశ పాలనను ఎదిరించడానికి కాకుండా భగవంతుడిని ఆరాధించడం వైపు నడింపించాయంటే ఆశ్చర్యమేముంది ?

వర్తమాన హిందూ సాధువులు ఈ తప్పుడు సంప్రదాయాన్నే అనుసరిస్తున్నారు. నేషనల్ డెమొక్రాటిక్ అలయెన్స్ (ఎన్డీఏ) తన నిరంకుశ విధానాలతో ప్రజలను ఇక్కట్ల పాలు చేసింది. పెద్ద విలువ గలకరెన్సీ నోట్ల రద్దు. వస్తు సేవల పన్ను (జీఎస్టీ)తో ప్రజలకు పలు సమస్యలను సృష్టించింది. వస్తు సేవల పన్ను మూలంగా లక్షలాది చిన్న, మధ్య తరహా, సూక్ష్మ పరిశ్రమలు ఖాయిలా పడ్డాయి. అసంఖ్యాక కార్మికులు జీవనా ధారాన్ని కోల్పోయారు. కంపెనీలు దివాలా తీయడంతో ఆత్యహత్య చేసుకున్న యజమా నులూ పెద్ద సంఖ్యలో ఉన్నారు. తోపుడు బండిపై వివిధ వస్తువులను, వీధుల్లో తిరుగుతూ విక్రయించుకునే వారు లేదా ఫుట్‌పాత్‌లపైన బండ్లను పెట్టుకొని వివిధ తినుబండారాలను అమ్ముకొనే వారు జీవనోపాధిని కోల్పోయారని, ఫలితంగా వారు తమ గ్రామాలకు తిరిగి వెళ్ళి పోయారని ముంబైలో ఒక టాక్సీ డ్రైవర్ ఇటీవల నాకు చెప్పాడు. ఎన్డీఏ ప్రభుత్వం గంగానదిని నేషనల్ వాటర్ వేగా తీర్చి దిద్దుతున్నది. తద్వారా ఆ పవిత్ర నదిని సరుకులను రవాణా చేసే గాడిదగా మార్చివేసింది !

దురదృష్టవశాత్తు ఈ పరిణామాల పట్ల దేశంలోని సాధువులు నసంగా ఉండిపోయారు. వారు తమ అనుయాయులను వ్యక్తిగత మోక్షం సాధించే దిశగా నడపడంలోనే నిమగ్నమయ్యారు. ఫలితంగా ఎన్డీఏ ప్రభుత్వ ప్రజా వ్యతిరేక విధానాలు యధేచ్ఛగా కొనసాగుతున్నాయి. పాలకుల అవివేకాన్ని ప్రశ్నించడమనే తమ సామాజిక బాధ్యతను సాధువులు లేదా ఆధ్యాత్మిక వేత్తలు తమకు తామే పూర్తిగా త్యజించడం వల్లే ఈ శోచనీయ పరిస్థితులు నెలకొన్నాయని చెప్పక తప్పదు.

యునైటెడ్ ప్రోగెసివ్ అలయెన్స్ (యూపీఏ) పాలన కించిత్ మెరుగు ధర్మవిరుద్ధ పాలనను ఉపేక్షించవచ్చనే సూత్రాన్ని జీసస్ ప్రవచిం చారు. ఒక దశలో సీజర్ యూదుల పట్ల నిరంకుశంగా వ్యవహరించసాగాడు. మరి సీజర్‌కు పన్నులు చెల్లించడం సరైన విషమేనా అని జీసస్‌ను అడిగారు. 'సీజర్‌కు ఇవ్వాల్సినవి సీజర్‌కు ఇవ్వండి, భగవంతునికి ఇవ్వాల్సినవి భగవంతునికి ఇవ్వండి' అని జీసస్ సమాధాన మిచ్చారు. మరింత స్పష్టంగా చెప్పాలంటే సీజర్ అధికార అభిజాత్యాన్ని జీసస్ అంగీకరించారు. అతని నిరంకుశ పాలనను చూసీచూడనట్లు మిన్నకుండిపోయారు. సీజర్‌కు పన్నులు చెల్లించడాన్ని ప్రతిఘటించాల్సిన అవసర మేమీ లేదని జీసస్ అభిప్రాయపడ్డారు. అంటే సీజర్ నిరంకుశ పాలన కొనసాగడం పట్ల జీసస్‌కు అభ్యంతరం లేకపోయిందని మనం అర్థం చేసుకోవచ్చు. మరొక సందర్భంలో సీజర్ ప్రతినిధి వేసిన ఒక ప్రశ్నకు సమాధానంగా 'నా రాజ్యం ఈ ప్రపంచానికి సంబంధించినది కాదు' అని జీసస్ అన్నారు. జీసస్ రాజ్యం అలౌకిక ప్రపంచానిది కాగా సీజర్ రాజ్యం ఈ ప్రపంచానిది. రెండూ వేర్వేరు రాజ్యాలు. ఈ ధరిత్రిపై ఉన్న రాజ్యపాలకుని నిరంకుశత్వాన్ని అలౌకిక రాజ్య వాసులు ఎదిరించాల్సిన అవసరమేమీ లేదు. కనుకనే మన్మోహన్ సింగ్ పలు ప్రజా వ్యతిరేక విధానాలను అమలు పరిచారు. కిరాణా వ్యాపారంలో విదేశీ ప్రత్యక్ష పెట్టుబడులను అనుమతించారు. చిన్న, మధ్యతరహా పరిశ్రమల ఉత్పత్తుల విషయంలో పాటిస్తున్న రిజర్వేషన్ల విధానాన్ని రద్దు చేశారు. యంత్రాలపై ఉత్పత్తి చేసి వస్త్రాలపై పన్నును తగ్గించారు (దీనివల్ల చేనేత రంగం తీవ్ర సంక్షోభంలోకి నెట్టివేయబడింది). ప్రభుత్వ రంగ బ్యాంకులలో పెచ్చరిల్లిపోయిన అవినీతిని అరికట్టకపోగా ఆ నానావిధ అక్రమాల వల్ల బ్యాంకులు దివాలా తీయకుండా ఉండేందుకుకై వాటికి భారీ నిధులను సమకూర్చారు.

ఎన్డీఏ, యూపీఏ తాత్విక మూలాలలో పలు సాదృశ్యాలు మనకు స్పష్టంగా కన్పిస్తాయి. క్షత్రియుల నిరంకుశత్వాన్ని ప్రతిఘటించాల్సిన అవసరం లేదని హిందూ బ్రాహ్మణులు భావిం చారు. సీజర్ నియంతృత్వాన్ని ఎదరించాల్సిన అవసరం లేదని క్రైస్తవులు భావించారు. ఈ భావనల వారసత్వం మూలంగానే నేటి భారతీయ పాలక సంకీర్ణాలు ప్రజా వ్యతిరేక విధానాలను జోరుగా అమలుపరిచాయి. అయితే ఎన్నికలలో విధిగా విజయం సాధించా ల్సిన అవసరం రెండిటికీ ఎంతైనా ఉన్నది. తత్కారణంగానే ఈ రెండు సంకీర్ణ ప్రభుత్వాలు కొన్ని పేదల అనుకూల విధానాలను అమలుపరిచాయి. ఉజ్వల పథకం కింద పేదలకు ఉచిత వంటగ్యాస్‌ను సమకూర్చే సదుపాయాన్ని ఎన్డీఏ కల్పించింది అలాగే ఆయుష్మాన్ భారత్ పథకంతో పేదలందరికీ ఉచిత ఆరోగ్య బీమా సదుపాయం కల్పిం చింది. యూపీఏ ప్రభుత్వం గ్రామీణ ఉపాధి హామీ పథకాన్ని అమలుపరిచింది. రైతుల పంట రుణాలను రద్దుచేసింది. యూపీఏ ప్రభుత్వం అమలుపరిచిన పేదల సంక్షేమ పథకాలతో పోల్చితే ఎన్డీఏ సర్కార్ చేపట్టిన సంక్షేమ పథకాలు పేద ప్రజలకు అధిక మేలును సమకూర్చేవి కావు. మరింత స్పష్టంగా చెప్పాలంటే యూపీఏ పథకాలే పేదలకు నిజమైన సంక్షేమాన్ని అందించాయి. అయితే ఇది ఒక ప్రత్యేక అధ్యయనానికి సంబంధించిన అంశం గనుక దానిసలా ఉంచుదాం. ప్రజా వ్యతిరేక ఆర్థిక వ్యవస్థను సృష్టించడం, ఏవో కొన్ని సంక్షేమ పథకాలతో పేదలను సంతృప్తి పరచడమే రెండు ప్రభుత్వ విధానాలలోని ఉమ్మడి అంశం అని మనం గుర్తించి తీరాలి.

ఈ నేపథ్యంలో, ఎన్నికల అనంతరం అధికారంలోకి రాబోయే కొత్త ప్రభుత్వం విధిగా ఈ క్రింద సూచించిన చర్యలను చేపట్టాలి. ఒకటి–జీఎస్టీ చెల్లింపు విధానాన్ని సరళీ కరించాలి. చిన్న, మధ్యతరహా వ్యాపార సంస్థలు తమ సమయాన్ని జీఎస్టీ చెల్లింపు పద్ధతికే కేటాయించవలసిన అవసరం లేకుండా చేయాలి. తమ వ్యాపారంపై పూర్తి శ్రద్ధ చూపించేందుకు ఆ రైతులకు విద్యుత్ సబ్సిడీలు, ప్రభుత్వ నిధులతో అమలువుతోన్న విద్యా, వైద్య సదుపాయాల కల్పనా పథకాలు మొదలైన వాటన్నింటినీ రద్దు చేయాలి. తద్వారా ఆదా అయిన సొమ్మును దేశ పౌరులం దరికీ కనీస ఆదాయాన్ని సమకూర్చేందుకు ఉపయో గించాలి. మూడు దేశ పౌరుల సగటు ఆదాయం ప్రభుత్వోద్యోగుల సగటు ఆదాయంతో సమానమయ్యేంత వరకు ప్రభుత్వోద్యోగుల వేతన భత్యాలు, పెన్షన్ల పెరుగుదలను స్తంభింప చేయాలి. నాలుగు వ్యూహాత్మక ప్రాధాన్యంగల ప్రభుత్వ రంగ సంస్థలను మినహా ప్రభుత్వ రంగ బ్యాంకులు, కంపెనీలు అన్నిటినీ ప్రైవేటీ కరించాలి. భారత్‌ను గ్లోబల్ నాలెడ్జ్ హబ్‌గా రూపొందించాలి. ఎన్డీఏ, యూపీఏలు ఈ విధానాలకు నిబద్ధమ య్యేంత వరకు ఓటర్లు వాటికి ప్రత్యామ్నా యంగా నోటాను వినియోగించు కోవడం మంచిది.

शुद्धि आन्दोलन

महर्षि दयानन्द के पुण्य प्रताप से भारतीय हिन्दू जाति जागृत हुई और उसने यह अनुभव किया कि जब तक ईसाई और मुसलमान होने से अपने भाई बहिनों को न बचाया जाएगा और जो मुसलमान या ईसाई हो गए हैं उन्हें फिर से शुद्ध करके हिन्दू धर्म में प्रविष्ट न किया जाएगा तब तक हिन्दू जाति सुरक्षित नहीं रह सकती।

सन् १६०८ ईस्वी की घटना है कि मद्रास प्रान्त में ईसाइयत प्रचार के अभिप्राय से "पादरी रावर्ट डोनो बीवी बस" एवं "पादरी आर.सी.बस चीसा" ने ब्राह्मण रूप बना और क्रमशः तत्त्व बोध गिरि स्वामी व बी राम मुनि नाम रख पीताम्बर, धोती पहिन, चन्दन लगा तथा सूर्य को जल चढ़ाकर लोगों से प्रथम संसर्ग पैदा किया, इस संसर्ग के उपरान्त जब परस्पर कुछ खान-पान का व्यवहार हो गया, तो पादरियों ने अवसर देख अपने ईसाई होने की घोषणा करदी फिर क्या था बात की बात में विप्र मण्डल ने एकत्र हो उक्त संसर्गित लोगों के जाति बहिष्कार की घोषणा करदी। बहिष्कृत समुदाय का नम्रतापूर्वक अपना बार २ हिन्दुत्व प्रगट करना भी अरण्य रोदनवत् सिद्ध हुआ।

इसी प्रकार बङ्गाल की प्रसिद्ध घटना है कि एक नवाव साहब ने स्वासिक चांवल बनवाए तदनन्तर पड़ोसी ब्राह्मणों से पूछा कि क्या आप लोगों ने आज चांवलों की सुगन्ध का अनुभव किया, उत्तर में हां पाया। इस पर नवाब साहब ने कहा कि चांवल हमारे उच्छिष्ट थे, जब तो तुम लोग मुसलमान हो गए और जाति ने भी नवाब साहब के कथन की पुष्टि करते हुए उन्हें जाति च्युत मान लिया।

तृतीय घटना कश्मीर की है कि सिकन्दर-बुत शिकन और उसके लड़के सुल्तान अलीशाह ने कश्मीर के हिन्दुओं को बलात यवन बनाया परन्तु जैनुलआवदीन ने उन हिन्दुओं को जो कि बलात् यवन किए गए थे पुनः हिन्दू धर्म में जा सकने का अवसर दिया, किन्तु हिन्दू समाज ने उन्हें नहीं अपनाया, परिणाम स्वरूप आज वहां की ९० प्रतिशत जनसंख्या यवन है।

इस प्रकार की अनेक घटनाएं इतिहास में अङ्कित हैं, अभिप्राय यह है कि जो व्यक्ति (बल से लोभ से, वञ्चना से अथवा मिथ्याभियोग से) किसी भी प्रकार धर्म्म च्युत हो गया कि बस हिन्दू धर्म के दरवाजे उसके लिए बन्द हो गए। आर्य समाज ने इस धर्म के रहस्य को समझा और उसका उपचार किया।

हुतात्मा श्री पं. लेखराम जी आर्य-मुसाफिर की ओजस्विनी एवम प्रभावशाली वक्तृताओं से प्रभावित होकर कई मौलवी इसलाम को छोड़कर वैदिक धर्म की शरण में आए जिनकी सूची श्री पण्डित जी ने कुलियात में दी है, इसी प्रकार आर्य समाज ने भी स्थान २ पर धर्म-विमुख भाइयों को अपनाकर वैदिक धर्म में सम्मिलित किया इस कार्य को करते हुए उन्हें अपने ही भाइयों की ओर से भीषण कष्ट सहने पड़े जिनका स्मरण करने से हृदय कांप उठता है, ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्तों ने अनेक प्रकार के कष्टों को सहन करते हुए भी बड़ी दृढ़ता से इस पतित पावन शुद्धि को प्रचलित रक्खा।

आर्य समाज का शुद्धि कार्य वड़ा विस्तृत है, व्यक्तिगत शुद्धियों के अतिरिक्त सर्व प्रथम सामुहिक रूप से जो शुद्धियां हुई उनमें जिला गुरुदासपुर, कांगड़ा, सयालकोट के डूमना और मेघ जातियों की थी। इस शुद्धि के संचालक श्री रामभजदत्त जी वकील थे इन जातियों की शुद्धि का काम दीनानगर में संभवतः १९०८ में प्रारम्भ हुआ। १५००० के लगभग डोम और मेघ जाति के लोग शुद्ध होने के लिए स्थान २ से आकर एकत्रित हुए जो शुद्ध किए गए। जिला सियालकोट की शुद्धि के प्रमुख नेता श्री लाला गंगारम जी वकील थे। पौराणिक हिन्दुओं के तीव्र विरोध एवम् कठिनाइयों का सामना करते हुए आर्य समाज ने इस काम को अत्यन्त दृढ़ता से गतिशील रक्खा यहां तक कि तीनों जिलों में से दोनो जातियां पूर्णतया शुद्ध होती गई। जिला सियालकोट से यह शुद्धि आन्दोलन जम्मू रियास में फैला। वहां तो आयज्ञ पुरुषों ने महान कष्ट उठाए। हुतात्मा श्री आर्य वीर रामचन्द्र जी की हत्या जिस निर्दयता से की गई वह उन दुःखद घटनाओं का जीता जागता उदाहरण है। इसी प्रकार एक "मेघ" भाई को जिसे यज्ञोपवीत दिया गया था, जात्याभमानी अत्याचारी हिन्दुओं ने यज्ञोपवीत तोड़कर यज्ञोपवीत के समान शरीर पर लोहे का ताट गरम करके दाग लगा दिया और कहा कि "अब तुझे हमने स्थाई यज्ञोपवीत दे दिया" इसी प्रकार के अनेकों कष्ट डूमना और मेघ जाति की शुद्धि में, आर्यो को हुए।

तदनन्तर जिला होशियारपुर के कबीर पन्थियों की शुद्धि श्री लाला देवीचन्द जी के प्रयत्नों से हुई। शुद्धि के पश्चात् आर्यों ने रचनात्मक कार्य प्रारम्भ किया। परिणाम स्वरूप इन्हीं जातियों के लोग वकील, प्रिन्सिपल, मास्टर, डॉक्टर, उपदेशक आदि वने और ये जातियां जिन्हें, हिन्दू छूना भी पाप समझते थे। आर्य समाज ने उन्हें मनुष्यता के अधिकार दिलाकर, स्वर्णीय हिन्दुओं के सदृश्य अच्छे नागरिक वना दिए। इन शुद्धियों के अनन्तर, सबसे महत्त्वपूर्ण शुद्धि मलकाना आदि जातियों की है, वो जातियां यू.पी. राजपूताना, मारवाड़, बरार, बड़ौदा, बलिया, गोरखपुर, भैड़ायच, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, अलाहावाद, बदायूं, बनारस, गुड़गांवा, मैनपुरी, एटा, इटावा, फरुखाबाद और समस्त अवध प्रान्त में बसी हैं। प्रान्तीयता तथा जातीय भेद के कारण वे विभिन्न नामों से पसिद्ध है। आगरा, मथुरा, भरतपुर में मलकाना अलीगढ़ में "लालखानी" और "मलखाने" जयपुर, जोधपुर और बीकानेर आदि में "कायम खारी" बड़ौदा में "मूले इस्लाम" ब्यावर में "महिरावत" "रावत" इन नामों से

सम्बोधित किए जाते हैं। ये लोग राजपूत वंश से सम्बन्धित हैं, अलवर और भरतपुर में "मेटह" "लालदासी" मलकाने जोगी और भाट मेरठ और मुजफ्फरपुर में मुहयाल, जाट और गूजर गुड़गांवा में गूजर जाट, मलकाने। बलिया, गोरखपुर में भाट। मुरादाबाद और बरार में घोसी, भैड़ायच में जोगी और घोसी इसी प्रकार अन्य स्थानों पर भी इसी तरह की कई अन्य जातियां भिन्न २ स्थानों में हैं। इनके एक दो रिवाजों को छोड़कर बाकी सब रहन सहन के ढङ्ग हिन्दुओं को सदृश्य हैं।

शुद्धि का प्रारम्भ-सर्व प्रथम श्री पं. लेखराम जी आर्य मुसाफिर का आगरा में आगमन हुआ, उन्होंने आगरे के आर्य समाजियों का ध्यान इन लोगों की ओर आकर्षित किया, तथा आगरा आर्य समाज में कुछ व्यक्तियों को शुद्ध भी किया। तब से आर्य समाज आगरा ने आसपास के मलकानों से मेल जोल और संपर्क बढ़ाना शुरू किया। १९०१ के पश्चात् स्वर्गीय श्री महात्मा हन्सराज जी और पंजाब केसरी श्री लाला लाजपत राय जी ने कई बार श्री बाबू नाथमल जी को लाहौर से आगरा की ओर शुद्धि कार्य के लिए भेजा, और इसके अतिरिक्त स्व. लाला रामप्रसाद जी बी.ए. रईस शाहबाद ने श्री महात्मा जी के आदेशानुसार ३ वर्ष के लिए उपदेशकों के रूप में वेतन लेकर मलकाना शुद्धि के लिए कार्य किया। आगरा आर्य समाज ने १९०६ में गुथला निवासी मलकानों को स्थानीय आर्य समाज में शुद्ध किया, इसके पश्चात् स्व. श्री पं. भोजदत्त जी ने मलकाना शुद्धि का कार्य अपने हाथ में लिया और दीग आदि मलकानों के कई गांव शुद्ध किए। किन्तु उन हिन्दू राजपूतों ने शुद्ध हुए मलकानों को अपने सम्पर्क में नहीं आने दिया, अतः यह आन्दोलन आगे न बढ़ सका। इसी बीच में बन्थरा के प्रसिद्ध ठाकुर बलवन्त सिंह जी आनरेरी मजिस्ट्रेट हिन्दू धर्म में दीक्षित होने के लिए सहमत हुए, उन्होंने श्री बाबू नाथमल जी दाइवरा श्री महात्मा हन्सराज जी को सन्देश भेजा कि यदि डन नरेश सर कर्नल प्रतापसिंह जी, हमारे यहां पधारें तो हम हिन्दू धर्म में, प्रविष्ट हो जाएगे। किन्तु किन्हीं कारणों वश ऐसा न हो सका। आर्य प्रतिनिधि सभा यू.पी. की ओर से मलकानों में व्यवस्थित रूप से कार्य हो रहा था। फलतः बन्थरा निवासी श्री ठाकुरर बलवन्त सिंह जी का उच्च्य परिवार श्री पं. भगवानदीन जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा यू.पी. द्वारा नियमपूर्वक शुद्ध होकर हिन्दू धर्म में दीक्षित हो गया। आगरा आर्य समाज और प्रतिनिधि सभा यू.पी. की ओर से एक ओर मलकाना जाति में और दूसरी ओर हिन्दू राजपूतों में कार्य जारी रहा। उधर मलाबार मोपला विद्रोह की अग्नि धधक पड़ी। मोपला लोगों ने जहां हिन्दुओंको लूटा, घर बार जला दिए। वहां हिन्दुओं को बलात् मुसलमान बनाने का घृणित कार्य भी बड़े उग्र रूप से किया। जिसने मुसलमान होना अस्वीकार किया उनकी निर्दयता-पूर्वक हत्या करके उनके मृत शरीरों को अन्धकार-युक्त कुपों में डाल दिया गया। इस रोमाञ्चकारी दुर्घटना से हिन्दुओं की आंखे खुलीं। हिन्दू अग्रगण्य नेताओं और विद्वानों ने बलात् मुसलमान बनाए गए हिन्दुओं के विषय में व्यवस्थाएं दी कि ये लोग पुनः शुद्ध होकर हिन्दू धर्म में सम्मिलित हो सकते हैं। आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब की ओर से श्री महात्मा हन्सराज जी की देखरेख में मालावार के बैठौर ठिकाने के आपत्ति-ग्रस्त हिन्दुओं की सहायता और शुद्धि का कार्य आरम्भ किया। सभा के वर्तमान प्रधान श्री महात्मा खुशहाल चन्द जी के साथ इस कार्य को सम्पादन करने के लिए कितने ही व्यक्ति लाहौर से गए। अन्न वस्त्रों की सहायता दी गई तथा मुसलमान बनाए गए। भाई बहिनों को पुनः हिन्दु धर्म में दीक्षित किया गया। चार हजार के लगभग हिन्दुओं को पुनः हिन्दू धर्म में प्रविष्ट किया गया। इसके अतिरिक्त टीपू सुल्तान के समय में जो हिन्दू मुसलमान हो गए थे उनको भी शुद्ध करके हिन्दू बनाया गया। श्री महाराज सर नाहरसिंह जी शाहपुराधीश के सभापतित्व में हुए १९२२ के आगरा शुद्धि सम्मेलन में मलकाना आदि जातियों के साथ रोटी-बेटी आदि व्यवहार करने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया। इसकी सूचना लाहौर के केसरी में प्रकाशित की गई। बस फिर क्या था पंजाब और यू.पी. से मौलवियों के झुण्ड के झुण्ड आगरे के समीपवर्ती क्षेत्र में पहुंचने लगे और उन्होंने मलकानों को हर प्रकार से बहकाना आरम्भ कर दिया।

उधर पंजाब के बड़े २ नगरों में मौलवी मुल्लाओं की आग वरसाने वाली वक्तृताओं ने देश के अमन को खतरे में डाल दिया। आगरा आर्य समाज ने १३ फरवरी सन् १९२३ को भारत के विभिन्न हिन्दू सम्प्रदायों के प्रतिनिधियों को निमन्त्रित करके एक बृहद् अधिवेशन का आयोजन किया। यह अधिवेशन अमर शहीद श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के सभापतित्व में हुआ। भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना करके कार्य आरम्भ करने का निश्चय कर दिया गया। सभा के प्रधान श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी और प्रधान मन्त्री श्री ठाकुर माधवसिंह जी बनाए गए। शुद्धि सभा की स्थापना के समय तक सैंकड़ों मुसलमान और मौलवी शुद्धि स्थल में आ पहुंचे।

श्री पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी ने शुद्धि क्षेत्र को दो भागों में विभाजित किया। देहली केन्द्र का कार्य वे स्वयंमेव सन्चालन करते रहे और आगरा का केन्द्र श्री पूज्य महात्मा हन्सराज जी सुपुर्द किया गया।

जहां मुसलमान मौलवी शतशः की संख्या में शुद्धि कार्य में बाधा डालने के लिए शुद्धि स्थल में पहुंचे थे वहां आर्य समाज और सनातन धर्म के सुद्धि कार्यकर्त्ता भी कम नहीं थे। शुद्धि कार्य के साथ २ सुद्धि सभा को कई सम्मेलन भी करने पड़े परन्तु वृन्दावन का महा सम्मेलन जो २९ मई १९२३ की श्री सर नाहरसिंह जी शाहपुराधीश की अध्यक्षता में हुआ जिसमें अवध और यू.पी. के कई बड़े २ राजा, जागीरदार, ताल्लुकेदार और ठाकुरों ने शुद्ध हुए मलकानों के साथ बैठकर दाल-भात खाया और पूर्णतया उनको क्षत्रीय बिरादरी में मिलाने का आश्वासन दिया। आर्य समाज के नेताओं के साथ वृन्दावन के महासम्मेलन में सनातन धर्म के प्रमुख पण्डित, श्री सत्याचरण जी शास्त्री, पं. गिरधर शर्मा जी चतुर्वेदी, स्वामी

दयानन्दजी बी.ए., पं. लक्ष्मीनारायण जी शास्त्री ।

पं. यदुकुल भूषण स्वामी प्रकाशानन्द जी, प्रिन्सिपल रघुवर दयाल जी व्याख्यान वाचस्पती पं. दीनदयाल जी और अन्य भी कई महानुभावों ने एक स्वर होकर मलकानों की शुद्धि का समर्थन किया ।

यद्यपि कांग्रेस ने हिन्दू मुस्लिम ऐक्य के कारण इसका विरोध किया परन्तु हिन्दुओं की शक्ति शुद्धि कार्य में उस समय पूर्णतया संगठित थी । अतः कांग्रेस को शुद्धि आन्दोलन बन्द करने में सफलता न मिली । मथुरा, भरतपुर, आगरा, अलवर, गुड़गावां, मेरठ, मुजफ्फरनगर, देहली, सहारनपुर, ग्वालियर, भैड़ायच, मुरादाबाद, फरुखावाद, एटा, इटावा, मैनपुरी, अजमेर, ब्यावर, अलीगढ़, बुलन्दशहर, बदायूं, गोरखपुर, सुल्तानपुर, बलिया, बड़ौदा आदि में बड़े समारोह से शुद्धि कार्य सफल हुआ ।

ईसाइयों से सावधानी-आर्य समाज ने स्पृश्य जातियों को ईसाइयत से बचाने के लिए स्थान स्थान पर कार्य आरम्भ कर दिया । किन्तु जंगली जातियां आर्य समाज के क्षेत्र से दूर और दृष्टि से ओझल थी । अतः आर्य समाज इन जातियों में न पहुंच सका । १९३७ के आरम्भ में मध्य भारत में भयङ्कर दुष्काल पड़ गया । सं. १८५६ के दुष्काल की भांति ईसाइयों की बन आई और उन्होंने भीलों को एक एक मन अनाज देकर ईसाई बनाया । स्व. महात्मा हन्सराज जी के आदेशानुसार मैंने मध्यप्रान्त में जाकर भीलों के ईसाई होने के सम्बन्ध में जांच की, इसके साथ ही दानवीर श्री सेठ जुगल किशोर जी बिरला का पत्र ५००० भीलों के ईसाई होने के बारे में शुद्धि सभा आगरा द्वारा मुझे मिला । इन दोनों महानुभावों के आदेश को पाकर मैं, मध्य भारत में आया और सैलाका स्टेट की रावटी तहसील को केन्द्र बना कार्य आरम्भ किया ।

४ वर्ष के भीतर हीरावटी, बासिन्द्रा, बाजना, कुशलगढ़, खवासा, किशनगढ़, जामली, सारंगी, बावड़ी, बड़वेढ, वुड़ैला, रामपुर, बाछीकेड़ा आदि के लगभग पच्चीस हज़ार मील ज ईसाई हो चुके थे पुनः शुद्ध करके हिन्दु धर्म में दीक्षित कर लिए गए । बान्सवाड़ा, थान्दला, रम्भापुर आदि में भी कुछ शुद्ध हुए । मील जाति वड़ी विस्तृत जाति है । यह मध्य भारत, राजपूताना, मारवाड़, बम्बई, बड़ौदा, सी.पी., बिहार आदि में बहुतायत से वसी हैं । दूसरे इलाकों में इनका नाम गौंड और सन्थाल भी कहा जाता है । रान्ची के क्षेत्र में पं. धर्मवीर विद्यालंकार ने सन्थाल जाति के सुधार का कार्य आरम्भ किया । इधर मध्य भारत में दयानन्द सालवेशन मिशन की ओर से भील जाति में शुद्धि और सुधार का कार्य चल रहा है परन्तु शुद्धि के कार्य को पूर्णतया प्रगति देने की अत्यन्त आवश्यकता है ।

ఆధ్యాత్మికుల సామాజిక బాధ్యత అన్న భావన సంప్రదాయ భారతీయ పాలనా వ్యవస్థకు ప్రాతిపదిక, భౌతిక జగత్తు మిథ్య అన్న వేదాంత విశ్వాసం ఆ భావనను కూల్చివేసింది. పాలకుల అవివేకాన్ని ప్రశ్నించే ఎదిరించే కర్తవ్యాన్ని త్యజింప చేసింది. పర్యవసానంగానే నేటి పాలక పక్షాలు ఎటువంటి సంకోచం లేకుండా ప్రజా వ్యతిరేక విధానాలను అమలు పరచగలుగుతున్నాయి.

నగర చరిత్రకారుడు కన్నుమూత

హైదరాబాద్ సిటీ, మార్చి 16 (ఆంధ్రజ్యోతి): హైదరాబాద్ వీధుల చరిత్ర, సంస్కృతి వంటి విశేషాలను ఉర్దూ, ఆంగ్ల భాషల్లో అక్షరీకరించిన రచయిత, విశ్రాంత అధ్యాపకుడు ఆనంద్‌రాజ్‌వర్మ(86) హఠాన్మరణం చెందారు. గురువారం తెల్లవారుజామున ఏడు గంటలకు హిమాయత్‌నగర్‌లోని స్వగృహంలో గుండెపోటుతో తుదిశ్వాస విడిచినట్లు ఆయన కుటుంబ సభ్యులు తెలిపారు. ఆనంద్‌రాజ్‌వర్మ పుట్టి పెరిగింది హైదరాబాద్‌లోనే. వీరి పూర్వీకులు 200 ఏళ్ల కిందట ఉత్తరప్రదేశ్ నుంచి నగరానికి వలసొచ్చారు. వర్మ తాతయ్య పాపాలాల్ ఆరవ నిజాం కొలువులోని అల్ అరబ్ ప్రైవేటు ఆర్మీ రెజిమెంట్‌లో సూపరింటెండెంట్‌గా పనిచేశారు. ఆనంద్‌రాజ్‌వర్మ నగర చరిత్ర, సంస్కృతి, రాజప్రసాదాలు, గల్లీ పేరు వెనుక గాథలపై 'దాస్తాన్-ఏ-హైదరాబాద్, 'హైదరాబాద్-దిసిటీ ఆఫ్ మెనీ స్టోరీస్', 'మహల్' వంటి ఆంగ్ల, ఉర్దూ పుస్తకాలు రాశారు. అన్వరుల్ ఉలూమ్ కళాశాల జంతుశాస్త్ర అధ్యాపకుడిగానూ, విభాగాధిపతిగానూ, అనంతరం ప్రిన్సిపాల్‌గానూ పనిచేసి ఉద్యోగ విరమణ పొందారు. కాగా, ఆనంద్‌రాజ్‌వర్మ అంత్యక్రియలు కవాడిగూడలోని శ్మశానవాటికలో నిర్వహించినట్లు ఆయన కుమారుడు, సినీనటుడు వినయ్‌వర్మ తెలిపారు. ఇదిలా ఉండగా, నగర చరిత్రకు వర్తమానానికి వారధిలా నిలిచిన ఆనంద్‌రాజ్‌వర్మ మృతి బాధాకరమని చరిత్ర అధ్యయనకారులు షఫీ వుల్లా, సజ్జద్ షాహీద్ తదితరులు పేర్కొన్నారు.

ఆనంద్‌రాజ్‌వర్మ

स्मृति शेष...

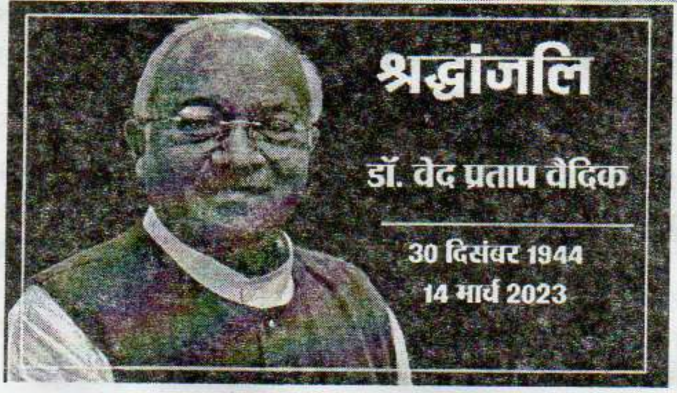

डॉक्टर वैदिक ने अपने लेखन से कई मिथक तोड़े। हिंदी के बारे में यह आम धारणा रही है कि वह साहित्य की भाषा है या हिंदी भाषा में देश की गोबर पट्टी की राजनीति के बारे में ही लिखा जा सकता है। वैदिक जी ने इस धारणा को तोड़ा। उन्होंने जिस सहज भाव से वैदेशिक मामलों पर हिंदी में लिखा उसकी दूसरी मिसाल नहीं है।

धोती वाला एक्टिविस्ट

■ उमेश चतुर्वेदी

एक्टिविस्ट पत्रकारिता पर इन दिनों खूब सवाल उठ रहे हैं। यह चर्चा में भी है। पत्रकारिता के छात्र भी अक्सर इसे लेकर जिज्ञासा प्रगट करते हैं। आज कोई यह पूछे कि एक्टिविस्ट पत्रकारिता का बेहतर नमूना क्या हो सकता है तो स्वर्गीय वेदप्रताप वैदिक की पत्रकारिता इसका बेहतर उदाहरण हो सकती है। उन्हें जब लगा कि भारतीय भाषाओं और हिंदी के समर्थन में कलम की धार तेज होनी चाहिए तो उन्होंने हिंदी और भारतीय भाषाओं के लिए अपनी कलम को ही तलवार बना लिया। जब उन्हें लगा कि उन्हें भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए, तब भी वे पीछे नहीं रहे। अंग्रेजी के वर्चस्व के खिलाफ भारतीय भाषाओं की प्रतिष्ठा स्थापना की बात हो या फिर भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन को गति देने का अवसर, वेद प्रताप वैदिक ने ना सिर्फ कलम को हथियार बनाया, बल्कि मंचों पर वह अपनी वाणी से भी अपनी सक्रियता का परिचय दिया।

हमारे समाज की स्मृति बहुत छोटी है। पहले जरूरी स्मृतियों को जगाने और बचाने की भूमिका पत्रकारिता करती थी। लेकिन अब परिदृश्य बदल चुका है। पत्रकारिता में भी वैसी प्रतिभाएं नहीं रहीं, जो जरूरी स्मृतियों को प्रासंगिक तरीके से परोस सकें। इसी सदी के पिछले दशक के आखिरी दिनों और मौजूदा दशक के शुरुआती दिनों में भारत में बदलाव की जो बयार बहनी शुरू हुई, उसकी जो पूर्व पीठिका रची गई, उसके एक महत्वपूर्ण पात्र वेदप्रताप वैदिक भी रहे। याद कीजिए, फरवरी 2010 में रामलीला मैदान में हुआ भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन। रामलीला मैदान के उस मंच पर बाबा प्रमुख मोहन राव भागवत, संघ के वरिष्ठ प्रचारक और विचारक गोविंदाचार्य, बाबा रामदेव और अजीत डोभाल के साथ वेदप्रताप वैदिक भी मौजूद थे। उसी सम्मेलन में पहली बार अन्ना हजारे भी शामिल हुए थे। तब आज की दिल्ली की सरकार के मुखिया अरविंद केजरीवाल और उनके सहयोगी मनीष सिसोदिया मंच पर पीछे की कतार में बैठे थे। उसी बैठक में भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन को तेज करने का आह्वान किया गया। तब भारत की फिजां में भ्रष्टाचार की गंध फैलनी तेज हो गई थी। रही-सही कसर कुछ महीने बाद हुए कॉमनवेल्थ खेलों ने पूरी कर दी। इसके बाद ही भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन देशव्यापी बना और देखते ही देखते भारत में बदलाव का प्रतीक बन गया। कह सकते हैं कि बदलाव की उस नींव में धोतीधारी वेदप्रताप वैदिक का भी योगदान रहा।

हिंदी का नौकरी के स्थान से रानी बनाने के आंदोलन में वैदिक जी की भूमिका को लेकर शायद मौजूदा पीढ़ी कम ही जानती होगी। वैसे उसे इसकी जरूरत भी नहीं है। लेकिन बहुत कम लोगों को पता है कि उन्होंने जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के अंतरराष्ट्रीय अध्ययन केंद्र में अपनी थीसिस हिंदी में लिखी तो इसके लिए उन्हें दंडित किया गया। उनकी छात्रवृत्ति रोक दी गई। इसे लेकर संसद में जबरदस्त हंगामा हुआ था। इसके बाद विश्वविद्यालय प्रशासन को झुकना पड़ा और अंग्रेजी की बजाय उनका शोध प्रबंध हिंदी में ही स्वीकार करना पड़ा। हिंदी को लेकर उनका प्रेम किशोरावस्था में ही दिखा। महज तेरह साल की आयु में तो उन्होंने हिंदी सत्याग्रह में हिस्सा लिया और जेल गए।

हिंदी विरोधियों का तर्क रहा है कि अंग्रेजी पूरी दुनिया में स्वीकार्यता और पढ़ाई का माध्यम है। इस धारणा को वैदिक जी ने अपनी पुस्तक 'हिंदी पत्रकारिता: विविध आयाम' में तोड़ा है। हिंदी के प्रति अपने प्रेम का एक किस्सा वे सुनाते थे। हिंदी विरोधी आंदोलन के दौरान अहमदाबाद में महारानी विक्टोरिया की मूर्ति तोड़ने का निश्चय हुआ। मूर्ति का पहरा कड़ा किया गया। उस आंदोलन में नेताजी के नाम से मशहूर समाजवादी नेता राजनारायण भी थे। प्रतिमा तक पहुंचने के लिए आंदोलनकारियों को एक दीवार फांदनी थी। तब वेदप्रताप वैदिक ही घुटनों के बल झुक घोड़ा बन गए और नेताजी उनकी पीठ पर चढ़कर दीवार फांद गए। इसके बाद मूर्ति तोड़ दी गई थी।

समाजवादी वैचारिकी से वैदिक पूरी तरह ओतप्रोत थे। समाजवाद के चिर विद्रोही राममनोहर लोहिया और मुलायम सिंह यादव से उनका गहरा रिश्ता रहा। शायद यही वजह है कि उनकी एक्टिविस्ट पत्रकारिता पर समाजवादी वैचारिकी का असर कहीं ज्यादा गहरा रहा है। पहले 'नवभारत टाइम्स' और बाद में 'प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया' की हिंदी सेवा 'भाषा' के संस्थापक संपादक रहे वेद प्रताप वैदिक लिखकर और बोलकर अपने आखिरी वक्त तक खूब को अभिव्यक्त करते रहे।

भारतीय कूटनीति पर पत्रकारिता के असर का जब भी सवाल उठेगा, 'हिंदुस्तान समाचार' के संस्थापक बालेश्वर अग्रवाल और वेदप्रताप वैदिक का ही नाम प्रमुखता से सामने आएगा। अफगानिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति हामिद करजई समेत कई नेताओं से वैदिक जी का अपनापा रहा। तुर्की, पाकिस्तान, बांग्लादेश, मॉरीशस आदि देशों के भी राजनय से उनका रिश्ता रहा। उनसे होने वाली बातचीत और मेल मुलाकातों में वे रिश्ते कई बार अति की तरह सामने आते थे, जिससे कई बार उनसे मिलने वाले असहज भी महसूस करते थे। भारतीय राजनीति, पत्रकारिता और साहित्य की तमाम हस्तियों से उनका निजी रिश्ता रहा। सहज संवाद की कला में भी वैदिक माहिर थे।

वैदिक जी अब हमारे बीच नहीं हैं। सवाल यह है कि उन्हें किस रूप में याद किया जाए, एक्टिविस्ट पत्रकार के रूप में या फिर राजनय के जानकार के रूप में, भाषा आंदोलनकारी के रूप में या ऐसे समाजवादी के रूप में, जिसे एक जरूरत पर किसी भी धारा के व्यक्तित्व से संवाद और सहयोग से कभी झिझक नहीं रही। वे आतंकी हाफिज सईद से भी मिल सकते थे और इसके लिए सोशल मीडिया के मौजूदा दौर में आलोचनाओं का सामना भी कर सकते थे, मौजूदा प्रधानमंत्री की आलोचना के चलते भी पिछले कुछ साल से एक वर्ग के निशाने पर रहे। लेकिन मंद स्मित के साथ वे उसका सामना करते रहे। उन्होंने सार्वजनिक तौर पर कभी इसकी शिकायत नहीं की।

राजनीति से वे खुद आधारित विरोध और समर्थन कर सकते थे, लेकिन एक विषय ऐसा है, जिसे लेकर उस राजनीति पर भी सवाल उठाने से नहीं हिचकते थे, जिससे उनकी नजदीकियां थीं। हाल के दिनों में उन्होंने राहुल गांधी पर उनके अंग्रेजी प्रेम को लेकर सख्त टिप्पणियां तक की थीं। भारतीय समाज जीवन से धोती-कुर्ता की पीढ़ी लगातार कम हो रही है। राजनीति और पत्रकारिता में तो धोती वाली पीढ़ी ना के बराबर रह गयी है। वेदप्रताप वैदिक भारतीय पत्रकारिता की उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते रहे, जो धोती पहनकर भी आधुनिक और समकालीन सवालों से मुंह मोड़ ही नहीं करती, बल्कि जरूरत पड़ने पर उसका समर्थन भी करती है। भारतीय राजनय के गहरे जानकार, भारतीयता की पत्रकारिता के प्रतिनिधि और हिंदी समेत भारतीय भाषाओं के कट्टर समर्थक को भविष्य इन तमाम रूपों में याद करता रहेगा...।

हिंदी पत्रकारिता के वैदिक युग का अवसान

■ अजीत द्विवेदी

हिंदी की मुख्यधारा की पत्रकारिता के स्वर्ण काल का प्रतिनिधित्व करने वाली मध्य प्रदेश की उसी की आखिरी कड़ी भी टूट गई। प्रभाष जोशी और राजेंद्र माथुर के साथ भाव और उनके बाद भी हिंदी को समृद्ध करने, उसे शक्तिशाली बनाने, उसे शिक्षा व विमर्श की माध्यम भाषा बनाने और हिंदी को हर क्षेत्र में विचार की मौलिक भाषा बनाने के प्रयास में ताजिंदगी लगे रहे डॉक्टर वेदप्रताप वैदिक का निधन हो गया। उनका जाना एक युग का अवसान है- यह सिर्फ कहने की बात नहीं है। इस बात को शब्दशः लिया जा सकता है। वास्तव में उनके निधन से हिंदी की बेहतरीन पत्रकारिता और विचारशीलता के एक गौरवशाली अध्याय का पटाक्षेप हो गया है। उनका जाना एक ऐसे सार्वजनिक बुद्धिजीवी का जाना है, जिसमें सत्ता से आंख मिला कर उसकी आलोचना करने की हिम्मत थी। इस समय उसकी बहुत जरूरत थी।

डॉक्टर वैदिक ने अपने लेखन से कई मिथक तोड़े। हिंदी के बारे में यह आम धारणा रही है कि यह साहित्य की भाषा है या हिंदी भाषा में देश की गोबर पट्टी की राजनीति के बारे में ही लिखा जा सकता है। वैदिक जी ने इस धारणा को तोड़ा। उन्होंने जिस सहज भाव से वैदेशिक मामलों पर हिंदी में लिखा उसकी दूसरी मिसाल नहीं है। कूटनीति और सामरिक नीति को अंग्रेजी का विषय माना जाता था। लेकिन वैदिक जी ने कूटनीति और सामरिक नीति की गूढ़ गंभीर बातों को बेहद सहज हिंदी में लिखा और कई पीढ़ियों का मार्गदर्शन किया। वे जितने सहज तरीके से राजनीति और समाज के बारे में लिखते थे वैसी ही सहजता से उन्होंने कूटनीति और अर्थशास्त्र जैसे क्लिष्ट विषयों पर भी लिखा। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय राजनीति और पत्रकारिता पर गहन शोधात्मक किताबें हिंदी में लिखीं।

उन्होंने उस दौर में पत्रकारिता शुरू की थी, जब इसके साथ किसी तरह का ग्लैमर नहीं जुड़ा था। जब यह समाज और देश के प्रति जिम्मेदारी वाला काम समझा जाता था तब से लेकर अब तक वे उसी भाव से इस जिम्मेदारी को निभाते रहे। देश और दुनिया की तमाम बड़ी हस्तियों के साथ निजी संबंधों के बावजूद डॉक्टर वैदिक सादगी और ईमानदारी के अपने बनाए रास्ते पर चलते रहे। आधुनिक पत्रकारिता की चकाचौंध में नहीं फंसे। दुनिया भर के नेताओं से अपनी पहचान, उनसे अपने संबंधों और अपनी उपलब्धियों के वर्णन में कई बार अतिरेक सुनने को मिलता था लेकिन यह सहज भोलेपन के भाव वाला था। उसका मकसद किसी तरह के लाभ हासिल करने का नहीं था। आज अगर किसी पत्रकार को प्रधानमंत्री कार्यालय के चपरासी से दोस्ती हो जाए तो वह अपने धन्य समझता है लेकिन डॉक्टर वैदिक एक प्रधानमंत्री को हिंदी सिखाने वाले थे और देश के एक दर्जन प्रधानमंत्रियों से उनके निजी संबंध थे। उन्होंने इन संबंधों का जिक्र तो जरूर किया लेकिन कभी इनका कोई निजी फायदा उठाने का प्रयास किया हो, इसकी मिसाल नहीं है।

डॉक्टर वैदिक ने देश, समाज और व्यक्तियों को देखने की अपनी एक अनोखी दृष्टि विकसित की थी, जिसे उनके हर तरह के लेखन में स्पष्ट देखा जा सकता है। उनकी एक खासियत यह भी कि उनके विचार और लेखन में कभी भिन्नता नहीं रही। वे जो सोचते थे, बोलते थे वही लिखते थे। दूसरी खास बात यह कि समाजवाद के प्रति अपने तमाम आग्रह के बावजूद विचारों से बेहद लचीले रहे। उन्होंने अपने को वैचारिक रूप से जड़ नहीं होने दिया। जिस तरह से वे शारीरिक रूप से अंतिम समय तक गतिमान रहे वैसे ही उन्होंने बदलते समय के हिसाब से अपने विचारों को भी गतिमान बनाए रखा।

हिंदी उनकी प्रेरणा रही और जीवन का संकल्प भी। वैदिकजी ने अपने छात्र जीवन से हिंदी के लिए संघर्ष शुरू किया था। जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज में उन्होंने अपनी थीसिस हिंदी में लिखने की जिद ठानी। अपना करियर दांव पर लगाया और प्रबल जेएनयू में अंग्रेजी के वर्चस्व को सफलतापूर्वक चुनौती दी। वे जेएनयू के पहले छात्र बने, जिनका शोध प्रबंध हिंदी में स्वीकार किया गया और उनको पीएचडी की उपाधि मिली। कह सकते हैं कि उन्होंने भारत के दूर दराज के उन तमाम छात्रों के लिए जेएनयू के दरवाजे खोल दिए, जिनके लिए भाषा एक बाधा बनती थी। उन्होंने उच्च शिक्षा में शोध के लिए भारतीय भाषाओं को मान्यता दिलाई। वैदिकजी ने शिक्षा की माध्यम भाषा के रूप में अंग्रेजी के वर्चस्व को चुनौती देने के लिए सिर्फ लेखन का रास्ता नहीं चुना, बल्कि सड़कों पर उतर कर संघर्ष किया। उन्होंने अंग्रेजी हटाओ का ऐतिहासिक आंदोलन किया। डॉक्टर वैदिक ने अपने आंदोलन में आम लोगों को जोड़ने का भी प्रयास किया। अंग्रेजी हटाओ के अपने अभियान में उन्होंने दुकानों के नाम हिंदी में लिखाने के लिए लोगों को प्रेरित करने का प्रयास किया।

यह बड़ा विरोधाभास था कि उनके विमर्श का मुख्य विषय कूटनीति और सामरिक नीति थी लेकिन विमर्श की भाषा हिंदी थी। वे जीवन भर अंतरराष्ट्रीय राजनीति और दुनिया के देशों की जटिल कूटनीति को हिंदी में समझते और समझाते रहे। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय राजनीति को समझने और समझाने के लिए नए शब्द और नई भाषा गढ़ी। संवाद की शैली में लिखने का अद्भुत तरीका विकसित किया, जिसे पढ़ते हुए ऐसा लगता था कि आप उनसे बात कर रहे हैं। उनकी भाषा का जैसा प्रवाह था वैसा ही लेखन का था। उनकी जानकारी का दायरा इतना विस्तृत था कि वे किसी भी विषय पर धाराप्रवाह बोल सकते थे और धाराप्रवाह लिख सकते थे। जटिल से जटिल विषय को वे इतना आसान बना कर लिखते थे कि किसी के लिए भी उन्हें पढ़ कर समझना दुरूह नहीं था। यही वजह थी कि उनके पाठकों का दायरा भी बहुत बड़ा था। खुद पढ़े लिखे विद्वानों के साथ साथ हिंदी को मामूली समझ रखने वाला भी उनका पाठक था। राजधानी के सबसे प्रतिष्ठित संस्थान आईआईसी और सप्रू हाउस से लेकर दूर देहात के गांवों तक में उनके पाठक थे। उन्होंने समकालीन राजनीति और कूटनीति के मामले में कई पीढ़ियों को जानकार बनाया। एक पत्रकार और विचारक के नाते यह उनकी बड़ी सफलता थी।

डॉक्टर वैदिक सिर्फ एक पत्रकार नहीं थे, जिसने इंदौर में 'नई दुनिया' से लेकर दिल्ली में 'नवभारत टाइम्स' तक काम किया फिर न्यूज एजेंसी 'पीटीआई' की हिंदी सेवा 'भाषा' के संस्थापक संपादक बने और बाद में देश के हर छोटे बड़े अखबार के लिए धुआंधार लेखन किया। वे विचारक थे, दार्शनिक थे, समाजवादी थे, आर्य समाज के आदर्शों को मानने वाले थे और सबसे ऊपर हिंदी को उसका गौरवशाली स्थान दिलाने के लिए संघर्ष करने वाले योद्धा थे। अपनी सोच को बेबाक तरीके से अभिव्यक्त करने वाले व्यक्ति थे। अपने आचरण से उन्होंने एक आदर्श स्थापित किया। वे एक सार्वजनिक बुद्धिजीवी थे, जिनके जाने से सिर्फ लेखन और पत्रकारिता की दुनिया में खालीपन नहीं आया है, बल्कि इस मुश्किल दौर में सार्वजनिक विमर्श की दुनिया में भी रिक्तता आई है। भीड़ लोगों के समान का एक विराट व्यक्तित्व चला गया। एक आदमकद शख्स!

हमेशा याद रहेगा वैदिकजी का संघर्ष

■ गोपाल राजपूत

उनका इस तरह जाना अविश्वसनीय लग रहा है। जिस उत्साह से वैदिक जी एक नए दक्षेस की योजना को साकार रूप देने में लगे थे, उससे तो युवा भी नहीं उनके सभी सहयोगी भी प्रेरणा प्राप्त कर रहे थे। देश में हिंदी भाषा तथा भारतीय भाषाओं के लिए तरुणाई से ही लगातार कर्मठता से जुड़े रहे वैदिक जी पिछले छह दशकों से देश में युवाओं के लिए, विशेष कर राजनीति और पत्रकारिता के क्षेत्र में रुचि रखने वालों के लिए, प्रेरणा स्रोत बने रहे हैं।

उनके लेख और उसमें उपस्थित गहराई तथा उनकी अपनी विश्लेषण क्षमता अद्भुत थी। अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक उथल-पुथल के वे गहरे अध्येता और विश्लेषक थे। हिंदी तथा भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार के लिए जहां भी काम हो रहा था, वैदिक जी हर प्रकार से सहयोग देने को तैयार रहते थे। संघ लोक सेवा आयोग में हिंदी माध्यम को लाने में उनके द्वारा किया गया संघर्ष भुलाया नहीं जा सकेगा। जेएनयू में हिंदी में डॉक्टरेट की थीसिस जमा करने के उनके संघर्ष ने उन्हें सारे देश में प्रतिष्ठा प्रदान की थी। वे जेएनयू के पहले छात्र थे, जिन्होंने हिंदी में थीसिस लिख कर डॉक्टरेट की डिग्री हासिल की थी। इसके लिए उनका अपना पूरा शैक्षणिक करियर दांव पर लगा दिया था।

अंतरराष्ट्रीय राजनीति खास कर दक्षिण एशिया के देशों की राजनीति पर उनका ज्ञान और जानकारी अद्भुत थी। भारत के लगभग सभी पड़ोसी देशों की राजनीति को उन्होंने बहुत नजदीक से देखा। इन देशों की राजनीति व एक देश के नाते उनकी विकास प्रक्रिया के संबंध में उन्होंने कितने ही लोगों को और गहन अध्ययन करने की प्रेरणा दी थी। इन देशों के राजनेताओं के साथ उनके निजी आत्मीय संबंध रहे और वे भी उनसे राय लेते रहते थे।

वैदिक जी के साथ बैठना अपने आप में चर्चा का स्तर ऊंचा कर देता था। उनकी अध्ययनशीलता सराहनीय थी। अंतिम समय तक अध्ययन और लेखन निर्बाध चलता रहा। उन्होंने देश और समाज में अपने लिए जो स्थान निर्मित किया था वह लोगों को आश्चर्य में डाल देता था। उस स्थान की पूर्ति संभव ही नहीं है। सही मायने में उनके जाने से देश की पत्रकारिता और सामाजिक विचार-विमर्श के क्षेत्र में एक खालीपन आया है। मुझे व्यक्तिगत रूप से बहुत गहरा आत्मीयता से जुड़े अपने बंधु के जाने का कष्ट तो अंतिम समय तक रहेगा ही। ईश्वर उन्हें अपने चरणों में स्थान दें!

(लेखक एनसीईआरटी के निदेशक रहे हैं।)

"वरिष्ठ पत्रकार वेदप्रताप वैदिक जी ने भारतीय भाषाओं में शोध व चिंतन के लिए सराहनीय कार्य किये। उनके निधन की सूचना दुःखद है। हिन्दी भाषा के संवर्धन के लिए उनके प्रयास लम्बे समय तक लोगों की स्मृति में रहेंगे। दुःख की इस घड़ी में उनके परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूं। ऊँ शांति!

अमित शाह,
गृहमंत्री, भारत सरकार।

"वरिष्ठ पत्रकार वेद प्रताप वैदिक जी को मेरी भावभीनी श्रद्धांजलि। बेबाक पत्रकार के रूप में वे हमेशा याद रखे जाएंगे। व्यक्तिगत रूप से वे मेरे अच्छे मित्र थे। उनका निधन पत्रकारिता जगत के लिए बड़ी क्षति है। भगवान दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें और परिजनों को संबल दें। ऊँ शांति!

नितिन गडकरी,
सड़क परिवहन मंत्री, भारत सरकार

"श्री वेद प्रताप वैदिक जी एक प्रखर पत्रकार एवं स्तंभकार थे, जो अपनी लेखनी से सम सामयिक विषयों पर अपनी बेबाक राय रखते थे। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय विषयों पर भी उनकी गहरी पकड़ थी। उनके निधन से हिंदी पत्रकारिता में एक रिक्तता आई है। उनके परिवार के प्रति मेरी संवेदनाएं। ऊँ शांति!

राजनाथ सिंह, रक्षा मंत्री, भारत सरकार

"वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक श्री वेद प्रताप वैदिक के निधन पर उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। श्री वैदिक का जाना पत्रकारिता जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति है। मैं ईश्वर से दिवंगत आत्मा को शांति एवं परिजनों को संबल देने की कामना करता हूं।

अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री, राजस्थान

"हिंदी में बेहतर पत्रकारिता का सूत्रपात करने वाले प्रख्यात लेखक, वरिष्ठ पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक जी के निधन का दुःखद समाचार प्राप्त हुआ। उनका निधन पत्रकारिता जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति है। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शांति एवं शोकाकुल परिवार को यह दुःख सहने की शक्ति प्रदान करें।

मनोहर लाल, मुख्यमंत्री, हरियाणा

"वरिष्ठ पत्रकार एवं विदेश मामलों के प्रख्यात विद्वान श्री वेद प्रताप वैदिक जी का निधन पत्रकारिता और हिंदी जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। ईश्वर दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें। ऊँ शांति!

अरविंद केजरीवाल, मुख्यमंत्री, दिल्ली

"वरिष्ठ पत्रकार, लेखक-बुद्धिजीवी और मेरे अच्छे दोस्त वेद प्रताप वैदिक जी के निधन की खबर से स्तब्ध हूं। वैदिक जी सभ्य, परिष्कृत, अफगानिस्तान और पाकिस्तान मामलों के अच्छे जानकार थे। इन मुद्दों पर हम अक्सर बात करते थे। शोक संतप्त परिवार को अपनी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं। ऊँ शांति!

जयराम रमेश, महासचिव, कांग्रेस पार्टी

"वरिष्ठ पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक जी के निधन का दुःखद समाचार प्राप्त हुआ। मेरे उनसे घनिष्ठ संबंध थे। उनके लेख मैं नियमित रूप से पढ़ता था। हिंदी पत्रकारिता में उनका योगदान ऐतिहासिक महत्व का रहा है। मैं ईश्वर से उनकी आत्मा की शांति और परिजनों को यह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करता हूं। ओम शांति।

कमलनाथ, पूर्व मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश

"देश के वरिष्ठ पत्रकार वेद प्रताप वैदिक का निधन दुःखद है। वैदिक जी पत्रकारिता की मजबूत निष्पक्ष आवाज थे। उनके निधन से हिंदी पत्रकारिता को अपूरणीय क्षति पहुंची है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें, उनके परिवार को यह दुःख सहने की शक्ति दें।

भूपेश बघेल, मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

"देश के लब्धप्रतिष्ठ पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक जी का दुःखद निधन पत्रकारिता व हिंदी जगत की अपूरणीय क्षति है। उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि। मेरी संवेदनाएं शोकाकुल परिजनों के साथ हैं। ईश्वर दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान और परिजनों को यह दुःख सहने की शक्ति दें। ॐ शांति!

योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

"वरिष्ठ पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक जी के आकस्मिक निधन की दुःखद खबर मिली। डॉ. वेद प्रताप वैदिक जी के चले जाने से पत्रकारिता जगत को अपूरणीय क्षति हुई है। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान कर शोकाकुल परिजनों को ... विकट घड़ी सहन करने की ...

हेमं...

"वरिष्ठ पत्रकार ड... निधन का दुःखद स... दिवंगत आत्मा को ... परिजनों को यह गहन ... प्रदान करने की प्रार्थ...

शिवराज सिंह ...

RNI No. DELHIN/2010/35044

मुद्दों की बजाय धर्म व जातिवाद की जंजीरों में उलझता हुआ चुनाव

लोकसभा चुनाव पूरे उफान पर है। सत्ता हासिल करने के लिए राजनीतिक दल एक-दूसरे को पछाड़ने का हर हथकंडा अपना रहे हैं। लेकिन इन सबके बीच असल मुद्दे गायब हैं और पूरा चुनाव धर्म और जातिवाद की जंजीरों में उलझा दिखाई दे रहा है। चुनाव पूर्व जितने भी सर्वेक्षण सामने आए, उनमें जीत-हार का आधार जाति और धर्म को ही माना गया। राष्ट्रीय और स्थानीय मुद्दे भी हालांकि मायने रखते हैं, लेकिन ज्यादातर लोगों के सिर पर जाति और धर्म का नशा चढ़ा हुआ है। मुस्लिम मतदाताओं के बारे में सभी सर्वेक्षणों में स्थायी रूप से ये मान लिया गया कि वे भाजपा को हराने वाले उम्मीदवार का साथ देंगे। इसी तरह कुछ जातियों के बारे में भी सर्वे एजेंसियों ने ये अनुमान लगा लिया कि उनका एकमुश्त वोट अमुक पार्टी को ही मिलेगा। कुछ और एजेंसियां हिन्दु वोट को लाम बन्ध कर चुनाव जीतने के संकेत दिए है। चुनाव विश्लेषण के लिहाज से ये उपयोगी हो सकता है, लेकिन लोकतंत्र के भविष्य और सेहत के हिसाब से बहुत ही खराब संकेत है।

देखा जाए तो लोकसभा चुनाव में मुद्दों की कोई कमी नहीं है, लेकिन असल मुद्दों के बजाय ऐसे मुद्दे उठाए जा रहे हैं, जिन मुद्दों का जनता से कोई सरोकार ही नहीं है। चोर-सिपाही का खेल, व्यक्तिगत-पारिवारिक उठापटक, गड़े मुर्दे खोदना, अपनी असफलता का ठीकरा दूसरों पर फोड़ कर जनता का वक्त जाया करना दुर्भाग्य की बात है। बेरोजगारी, किसानों की समस्याएं, जनसंख्या वृद्धि, अर्तव्यवस्था से संबंधित मुद्दों, बैंकिंग, औद्योगिक विकास, देश की सार्वजनिक संस्थाओं की खस्ता हालत आदि मुद्दों पर चुप्पी बनाए रखना क्या जिम्मेदार प्रशासन की निशानी है ? वादे न बनाए रखना क्या जिम्मेदार प्रशासन की निशानी है ? वादे तो इस बार भी बहुत किए गए हैं, परंतु भूले-बिसरे वादों की लंबी कतारें जनता को आईना दिखाकर फिर से प्रशासन पर विश्वास न करने का संकेत दे रही हैं।

प्रत्येक चुनाव में क्षेत्रीय दल हो या राष्ट्रीय दल, जाति और धर्म की बात न करने को कहते हैं, पर टिकट बंटवारे में धर्म और जातीय समीकरण का ध्यान जरूर रखते हैं। इतिहास गवाह है कि देशके वोटर्स का बड़ा वर्ग भी धर्म और जातिवाद के डोरे में उलझकर कई बार वोटिंग कर देता है। भारत जैसे जाति-आधारित समाज में राजनीति उससे युक्त रहे, ये असम्भव है। हालाँकि आजादी के पहले जातिगत आधार पर समाज को विभाजित करने वाली प्रथाएं मिटाने के लिए अनेक आंदोलन हुए। गांधीजी ने तो अछूतोद्धार को अपनी लड़ाई का हिस्सा बनाया ही था, उनके समानांतर अनेक समाज सुधारकों ने भी जाति के नाम पर होने वाले भेदभाव के विरुद्ध संघर्ष किये। समाजवादी आंदोलन के नाम पर जाति मिटाने के प्रयास भी हुए, लेकिन डॉ. लोहिया के अनुयायी आज के समय के सबसे बड़े जातिवादी बनकर उभरे हैं, जिन्होंने पूरे राजनीतिक विमर्श को जाति के जाल में जकड़ दिया।

भारतीय राजनीति की मुख्य विशेषता है- परम्परावादी भारतीय समाज में आधुनिक राजनीतिक संस्थाओं की स्थापना। स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय राजनीति का आधुनिक स्वरूप विकसित हुआ। अतः यह सम्भावना व्यक्त की जाने लगी कि देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था स्थापित होने पर भारत से सांप्रदायिकता और जातिवाद समाप्त हो जाएगा, किन्तु ऐसा नहीं हुआ, अपितु सांप्रदायिकता और जातिवाद न केवल समाज में ही वरन् राजनीति में भी प्रवेश कर उग्र रूप धारण करता आ रहा है।

भारत के राजनैतिक इतिहास के पन्ने पलटें तो यह बात साफ हो जाती है कि देश में हुए पहले आम चुनाव से ही धर्म व जातिवादी राजनीति चलने लगी थी। क्षेत्रीय दलों के उभार ने इसे और मजबूत किया। कुछ क्षेत्रीय दल तो सिर्फ और सिर्फ जाति के आधार पर ही खड़े हैं तो कुछ राष्ट्रीयता धर्म के आधार पर लोगों को विभाजित कर राजनीति करने में लगे रहे। सन् ८० के बाद कुछ राज्यों में जातीय आधारित क्षेत्रीय दल हावी हुए, तो राष्ट्रीय पार्टी कमजोर होने लगी। पहले कांग्रेस के पैर उखड़े। उत्तरप्रदेश और बिहार में देश की सबसे पुरानी पार्टी का अस्तित्व ही दांव पर लग गया।

भाजपा आज कई राज्यों की सत्ता पर सवार है। पर भाजपा भी जातिवादी राजनीति से अछूति न रही।

जब भी हमारे देश में चुनाव आते हैं, धर्म और जातिवाद हावी हो जाता है। प्रत्याशियों का चयन भी क्षेत्र की जातिगत बाहुल्यता देखकर किया जाता है। जिस जाति के लोग जिस क्षेत्र में अधिक होते हैं, उसी जाति के नेता को टिकट आवंटन में वरीयता मिलती है। कुछ एक बड़े नेताओं को छोड़कर ज्यादातर नेता जातिगत आधार पर बने हुए नेता ही होते हैं। जिस जाति के लोग कम होते हैं, उससे बिरले ही होते हैं जो नेता बन जाते हैं। खास बात यह है कि धर्म व जाति के आधार पर बनें हुए यह नेता कभी भी अपने आपको ऐसा सिद्ध नहीं होने देते हैं। दिखावा तो यही रहता है कि हम सभी को समान रूप से देखते हैं।

यह सच है कि वोट पर धर्म व जाति का असर पड़ता है। कभी-कभार धर्म व जाति के आधार पर ध्रुवीकरण इतना तीखा होता है कि इसके सिवाय और कुछ नहीं लगने लगता है। लेकिन आंकड़े बताते हैं कि धर्म व जाति वोट पर असर डालने वाले कारकों में से 'एक' है, 'एकमात्र' कतई नहीं। आमतौर पर कोई भी एक जाति या धर्म किसी एक दल या उम्मीदवार के पक्ष में ४०-४५ फीसदी से ज्यादा वोट नहीं डालती है। कभी-कभार ही किसी एक जाति या धर्म के ज्यादातर वोट किसी एक ही पार्टी को मिल जाने का करिश्मा हुआ है।

अलग-अलग राज्य में अलग-अलग समस्याएं हैं। कहीं पानी की कमी है तो कहीं बाढ़ बरसात तबाही मचाती है। स्वास्थ्य सेवा का क्षेत्र तो अभी भी शहर तक सिमटा हुआ है, गांव-देहात में अब भी सामान्य बुखार की गोली नहीं मिलती। शिक्षा का मामला भी इससे जुदा नहीं माना जा सकता। हजारों हजार गांव ऐसे हैं जहां आज भी स्कूल नहीं मिलेगा। पीने के साफ पानी से लेकर शौचालय तक का टोटा है। किसान तो मुख्य धारा में होना चाहिए। बेरोजगारी की समस्या कैसे दूर होगी - यह बताया जाना जरूरी है। पर ताली दोनों हाथ से बजती है। सिर्फ नेताओं और पार्टियों को जिम्मेदार ठहराया जाना गलत है।

इसे पिछड़ापन कहें या जागरुकता की कमी, २१वीं सदी का मतदाता भी धर्म जाति देखकर बटन दबाता है। यह नहीं सोचा जाता कि तात्कालिक लाभ फायदेमंद है या दीर्घकालीन। एक दिन का वोट पांच सालका पछतावा देगा। अतः प्रत्येक नागरिक को जनहित का विचार करना होगा। जब तक हमारे देश का पढ़ा-लिखा मतदाता जाति व धर्म से प्रभावित होकर वोट करता रहेगा, तब तक भारत सबसे बड़ा लोकतंत्र होकर भी लोकतंत्र की स्पिरिट को मिस करता रहेगा।

२५ और २६ मार्च २०२३ के दिनों में आयोजित

श्री मद्दयानन्द गुरुकुल मलकपेट, हैदराबाद के प्रथम वार्षिकोत्सव के सन्दर्भ में

उपस्थित जनता को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक सभा के आर्य नेता स्वामी आर्यवेश जी
मंच पर स्वामी प्रणानन्दजी, श्री उदयनाचार्य जी, डॉ. धर्मेन्द्र जी, माता निर्मलायोग भारती जी,
श्री सुधाकर गुप्ता जी, सार्वदेशिक सभा के मन्त्री प्रो. विट्ठल राव आर्य एवं
पं. धर्मपाल शास्त्री जी तथा अन्य देखे जा सकते है ।

स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज आर्य समाज सैदाबाद के महामंत्री डॉ. अशोक कुमार जी विशेष रूप से मिलकर आशीर्वाद देने के लिए उनके यहाँ पहुँचे साथ में हरिकिशन वेदालंकार जी

संस्कृत परिषत् की ओर से गुरुकुल मलकपेट में आयोजित संस्कृत गोष्ठी में संस्कृत अकादमी के डायरेक्टर तथा उपडायरेक्टर गोष्ठी का प्रारम्भ करते हुए तथा सम्बोधित करते हुए

आर्य प्रतिनिधि सभा में आर्य समाज स्थापना के दिन यज्ञ करते हुए अधिकारीगण

श्रीरामनवमी पं. नरेन्द्र जन्म दिवस के दिन यज्ञ करते हुए प्रतिनिधि गण

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month
आर्य जीवन 03-04-2023 Registered-Reg. No. HD/783/2021-23 RNI No. 52990/93

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Editor : Sri Vithal Rao Arya, M.Sc., L.L.B., Sahityaratna.
Arya Pratinidhi Sabha A.P.-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-500095.
Phone : 040-24753827, 24756983, Narendra Bhavan : 040 24760030.
Annual Subscription Rs. 250/- సంపాదకులు : విఠల్ రావు ఆర్య, ప్రధాన

To,

कोठी स्थित पं. नरेन्द्र स्टेच्यू के पास आर्य समाज के प्रतिनिधियों द्वारा यज्ञ सम्पन्न कर

पं. नरेन्द्र जी की

सेवाओं का, त्याग और बलिदान का उल्लेख करते हुए जनता को सम्बोधित किया गया

चित्र में सभा के मान्य मन्त्री श्री वेंकटरघुरामुलु जी, उपप्रधान टा. लक्ष्मण जी, उपप्रधान डॉ. वसुधा शास्त्री जी, पुस्तकाध्यक्ष श्री बसिरेड्डी जी और अन्य महानुभाव

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR.

Editor : Sri Vithal Rao Arya E-mail : acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691.

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్ రావు ఆర్య, ప్రధాన సభ, ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95. Ph : 040-24753827, E-mail : acharyavithal@gmail.com

संपादक : श्री विट्ठल राव आर्य, प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रिन्टर्स, चिक्कड़पल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।

प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा, आं.प्र.- तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद-500 095. Narendra Bhavan Ph : 040 24760030.